हिन्दी व्याकरण और प्रयोग

(नवीं कक्षा के लिए)

प्रकाशक

माध्यमिक शिक्षा परिषद, ओड़िशा

https://withteachers.in/

माध्यमिक शिक्षा परिषद, ओड़िशा द्वारा ९वीं कक्षा के लिए
अनुमोदित और प्रकाशित

माध्यमिक शिक्षा परिषद, ओड़िशा

लेखक-मण्डल

डॉ. राधाकान्त मिश्र (पुनरीक्षक)

डॉ. रघुनाथ महापात्र

डॉ. लक्ष्मीधर दाश

डॉ. नलिनी कुमारी पाढ़ी

संयोजक

श्री राजकिशोर चौधुरी

प्रथम संस्करण : 2012
2019

टंकण : ग्राफ 'एन्' ग्राफिक्स, कटक

मुद्रण :

मूल्य :

https://withteachers.in/

भूमिका

हिंदी भारत की राजभाषा है । यह अंतरप्रान्तीय व्यवहार की भाषा भी है । ओड़िआभाषी बालक–बालिकाओं के लिए इसका ज्ञान उपयोगी है । इसे सरल ढंग से सीखने के लिए पाठ्य–पुस्तकें बनाई जा रही हैं ।

मैं आशा करता हूँ, हमारा यह प्रयास सफल होगा । हम संपादक–मंडल के प्रति आभार व्यक्त करते हैं ।

सभापति
माध्यमिक शिक्षा परिषद
ओड़िशा, कटक

https://withteachers.in/

प्रस्तावना

हिंदी एक सरल भाषा है । इसका व्याकरण भी सरल है । तृतीय भाषा के स्तर को ध्यान में रखकर कक्षा नौ और दस के लिए दो अलग अलग पुस्तकें लिखी गई हैं । इसमें भाषा के उच्चारण, वाचन, लेखन और संप्रेषण की सभी क्षमताओं को विकसित करने के लिए सामग्री दी गई है । कक्षा नौ में व्याकरण के सभी अंगों का सम्यक परिचय दिया गया है । नियमों और परिभाषाओं को अत्यंत सरल और संक्षिप्त रूप में दिया गया है । अनुशीलनियाँ अधिक हैं । शिक्षकों से अनुरोध है कि वे यहाँ दिये गये प्रश्नों के अनुसरण में नये प्रश्न भी बनाकर अभ्यास करायें ।

आशा है, यह पुस्तक उपयोगी होगी ।

लेखक–मंडल

https://withteachers.in/

विषय-सूची

Q1MBAI

	विषय	पृष्ठ
1.	व्याकरण क्यों	1
2.	ध्वनि और वर्ण	2
3.	अच्छी हिन्दी कैसे सीखें : लेखन, अनुनासिकता और अनुस्वार	8
4.	रूप - विचार	13
5.	संज्ञा	16
6.	लिंग	23
7.	वचन	33
8.	कारक	40
9.	सर्वनाम	51

https://withteachers.in/

विषय		पृष्ठ

10.	विशेषण	58
11.	क्रिया	62
12.	अव्यय	76
13.	अपठित अनुच्छेद का पठन और अवधारण	82
14.	अनुवाद	84

====

https://withteachers.in/

व्याकरण क्यों?

भाषा बोलने और लिखने में गलती न हो, उसे सुनकर दूसरे लोग न हँसें, इसलिए हम व्याकरण पढ़ते हैं। व्याकरण में ध्वनि, शब्द, वाक्य आदि के नियमों पर विचार किया जाता है।

✯ **भाषा** बोली जाती है :

हमारे मुँह से जो बातें निकलती हैं उनके सबसे छोटे खण्ड को **ध्वनि** कहते हैं। आ, ग, च, द, प, स आदि एक-एक ध्वनि हैं। इनका उच्चारण करने से पता चलता है कि ये छोटे-छोटे खण्ड हैं। इनका उच्चारण करके देखें।

✯ **भाषा** लिखी भी जाती है :

ध्वनियों को लिखने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें **वर्ण** कहते हैं। किसी भाषा के वर्णों के समूह को वर्णमाला कहते हैं। आ, ग, च, द, प, स आदि के लिखित रूप को वर्ण कहते हैं।

हम जैसे बोलते हैं, वैसे ही लिखने की कोशिश करते हैं। लेकिन बोली बराबर बदलती जाती है और लेखन उसके पीछे-पीछे चलता है।

✯ **शब्द :** एक या एकाधिक ध्वनियों का एक साथ उच्चारण करने पर शब्द बनते हैं।

हर शब्द का कोई न कोई अर्थ होता है।

✯ **पद :** शब्द वाक्य में आने पर पद कहलाते हैं। पद में शब्द के साथ शब्दांश भी जुड़ा होता है।

https://withteachers.in/

★ **वाक्य :** निश्चित क्रम में एकाधिक पद आकर पूरे अर्थ को व्यक्त करने से वाक्य बनता है।

★ **भाषा :** आपस में विचारों का आदान–प्रदान करने के लिए हम भाषा में वाक्यों का ही प्रयोग करते हैं।

ध्वनि और वर्ण

ध्वनियों का उच्चारण करते समय हम मुँह के निम्न अंगों को काम में लाते हैं –

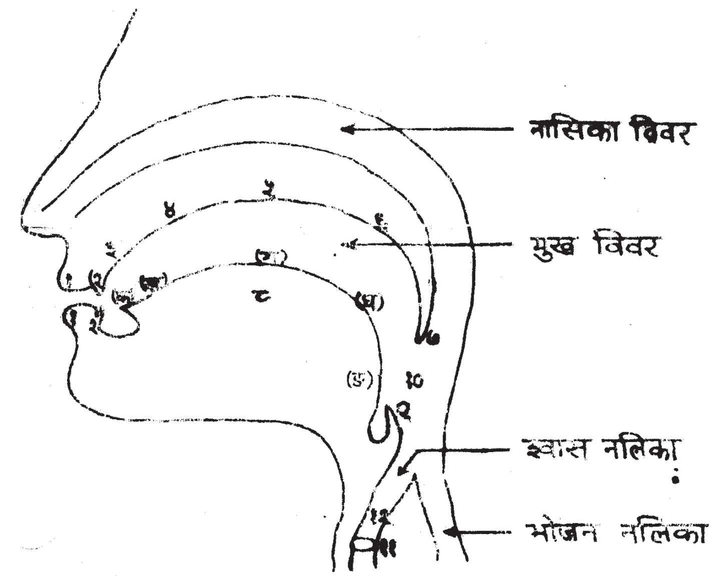

१. ओंठ (दोनों) २. दाँत (ऊपर के) ३. वर्त्स (मसूड़ा), ४ कठोरतालु (वर्त्स के पीछे का कठिन भाग) ५. मूर्द्धा (कठोरतालु कोमल तालु का मिलनस्थल) ६ कोमलतालु (मूर्द्धा के पीछे का कोमल भाग) ७ अलिजिह्वा या कौआ (कोमल तालु के अंतिम छोर पर लटकता हुआ मांस खंड) ८ जिह्वा ९. स्वरयंत्रावरण १० उपालिजिह्वा (गलबिल) ११ स्वरयंत्र १२ काकल (स्वरयंत्रमुख)

फेफड़ों से आनेवाली वायु और इन अंगों की सहायता से सभी ध्वनियों का उच्चारण होता है।

★ **हिन्दी की ध्वनियाँ और वर्णमाला**

उच्चारण की दृष्टि से हिन्दी की ध्वनियाँ दो प्रकार की हैं – स्वर और व्यंजन

स्वर : अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

https://withteachers.in/

व्यंजन :	‘क’ वर्ग – क ख ग घ ङ

‘च’ वर्ग – च छ ज झ ञ

‘ट’ वर्ग – ट ठ ड ढ ण (ड़ ढ़)

‘त’ वर्ग – त थ द ध न

‘प’ वर्ग – प फ ब भ म

अन्तस्थ – य र ल व

ऊष्म – श ष स ह

मिश्र व्यंजन : क्ष (क्+ष), त्र(त्+र), ज्ञ (ज् + ञ), श्र (श् + र)

अयोगवाह : ‘ं’ (अनुस्वार) ‘ः’ (विसर्ग)

क्योंकि–‘ं’ और ‘ः’ स्वर या व्यंजन नहीं हैं, फिर भी उनके साथ आते हैं ।

इनके अतिरिक्त ‘ ँ ’ चन्द्रबिन्दु का प्रयोग केवल स्वरों के साथ होता है,

जैसे– अँ आँ इँ उँ ऊँ एँ

सभी व्यजंन अलग रूप में साधारणतः आधा उच्चरित हो पाते हैं। पूर्ण रूप से उच्चरित होने के लिए इनके साथ ‘अ’ मिलाना पड़ता है,

जैसे – क = क् +अ। आधा रूप ‘क्’ हलन्त लगाकर दिखाया जाता है।

अरबी–फारसी–तुर्की से आगत शब्दों में क़ ख़ ग़ ज़ फ़ ध्वनियाँ उच्चरित होती हैं। अंग्रेंजी से आगत शब्दों में ऑ ज़ फ़ का भी उच्चारण होता है।

स्वर

‘स्वर’ वे ध्वनियाँ हैं जिनके उच्चारण में मुख विवर से बाहर आती हवा का कहीं कोई अवरोध नहीं होता।

व्यंजन

व्यंजन वे ध्वनियाँ हैं जिनके उच्चारण में मुखविवर से बाहर आती हवा का कहीं न कहीं पूर्ण या आंशिक अवरोध होता है ।

https://withteachers.in/

मात्राएँ

स्वरध्वनि	मात्रारूप	उदाहरण	स्वरध्वनि	मात्रारूप	उदाहरण
आ	ा	का	ओ	ो	को
इ	ि	कि	औ	ौ	कौ
ई	ी	की	अनुस्वार	ं	कं
उ	ु	कु	विसर्ग	ः	कः
ऊ	ू	कू	चन्द्रबिंदु	ँ	आँ, हाँ
ऋ	ृ	कृ			
ए	े	के			
ऐ	ै	कै			

'र' के साथ लेखन में ु और ू मात्राओं का योग क्रमशः 'रु' और 'रू' के रूप में होता है ।

कुछ वर्णों के दो–दो रूप

यहाँ ध्यान देना है कि कुछ वर्ण और अंक दो–दो रूपों में लिखे जाते हैं। कुछ के रूप सर्वमान्य हैं। इन्हें मानक रूप कहते हैं। कुछ रूप ऐसे प्रचलित हैं। उनको मानकेतर रूप कहते हैं । सबको मानक रूपों का ही प्रयोग करना चाहिए। नीचे इनके रूप दिये जाते हैं –

मानक रूप	मानकेतर रूप	मानक रूप	मानकेतर रूप
अ	अ	ण	ण
आ	आ	ध	ध
ऋ	ऋ	भ	भ
ख	ख	ल	ल
छ	छ	श	श
झ	झ	क्ष	क्ष

https://withteachers.in/

अर्द्धव्यंजन वर्ण

हिन्दी में अर्द्धव्यंजन वर्णों के रूप चार प्रकार से बनते हैं -

१. कुछ वर्णों का हुक हटाकर - क्   फ्

२. कुछ वर्णों की खड़ी पाई हटाकर - ख्, ग् घ् च् ज् झ् ञ् ण् त् थ् ध्
न् प् ब् भ् म् य् ल् व् श् ष् स्

३. कुछ वर्णों के नीचे हल् चिह्न लगाकर - ङ् छ् ट् ठ् ड् ढ् ह्

४. 'र' के विशेष रूप - ्र (क्र), र्‍ (र्क), ्र (ट्र)

ध्वनियों का उच्चारण

✯ स्वरों का उच्चारण

स्वरों के उच्चारण में जिह्वा ही सक्रिय रहती है। कभी जीभ का अगला भाग, कभी मध्य भाग या कभी पिछला भाग उच्चारण में सहायक होता है। इस प्रकार स्वरों के तीन भेद होते हैं -

१ - अग्र स्वर - इ, ई, ए ऐ

२ - मध्य स्वर - अ

३ - पश्च स्वर- उ ऊ ओ औ आ

स्वरों के उच्चारण में लगनेवाले समय के आधार पर स्वर दो प्रकार से उच्चरित होते हैं।

१ - ह्रस्व स्वर - अ इ उ ऋ

२ - दीर्घ स्वर - आ ई ऊ ए ऐ ओ औ

ह्रस्व स्वरों के उच्चारण में कम समय लगता है। दीर्घ स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों की तुलना में दुगुना समय लगता है। 'ऋ' का उच्चारण स्वर न होकर व्यंजन 'रि' की तरह होता है। फिर भी वर्णमाला में यह स्वर के रूप में गृहीत है। इसे ह्रस्वस्वर माना जाता है।

https://withteachers.in/

✯ व्यंजनों का उच्चारण

व्यंजनों के उच्चारण में उनके स्थान और उच्चारण की चेष्टाएँ या प्रयत्न मुख्य होते हैं।

१ – उच्चारण स्थान : ओंठ, दाँत, वर्त्स, मूर्धा, तालु कण्ठ और काकल स्थान हैं। इनके आधार पर व्यंजन द्व्योष्ठ्य, दन्त्योष्ठ्य, दंत्य, वर्त्स्य, मूर्धन्य, तालव्य, कण्ठ्य और काकल्य होते हैं।

२ – उच्चारण प्रयत्न : फेफडों से आनेवाली हवा को विभिन्न रूप देने के लिए उच्चारण अवयव जो प्रयत्न करते हैं उन्हें उच्चारण प्रयत्न कहते हैं।

स्पर्श, स्पर्शसंघर्षी, नासिक्य, पार्श्विक, लुण्ठित, उत्क्षिप्त, संघर्षी और अर्द्धस्वर प्रयत्न हैं।

(i) स्पर्श – मुख विवर में दो स्थानों को 'स्पर्श' कहते है।

अतएव क, त, प, ब आदि स्पर्श ध्वनियाँ हैं।

(ii) स्पर्श संघर्षी – मुखविवर में हवा के रुकने के बाद घर्षण के साथ बाहर निकलने को 'स्पर्शसंघर्षी' कहते हैं, जैसे :- च, छ, ज, झ

(iii) नासिक्य – हवा के नासिका मार्ग से निकलने से 'नासिक्य' ध्वनियाँ उच्चरित होती हैं, जैसे – ङ, ञ, ण, न, म

(iv) पार्श्विक – हवा के जिह्वा के किनारे (पार्श्व) से होकर निकलने से 'पार्श्विक' ध्वनियाँ उच्चरित होती हैं, जैसे :- ल।

(v) लुण्ठित – जीभ का अग्रभाव मसूड़े के पास दो तीन बार हिलने से लुण्ठित ध्यनि उच्चरित होती है, जैसे – र

(vi) उत्क्षिप्त – जीभ की नोंक उलटकर कठोर तालु से टकराकर आगे की ओर फेंकी जाने से उत्क्षिप्त ध्वनियाँ उच्चरित होती हैं, जैसे :- ड़ ढ़।

https://withteachers.in/

(vii) संघर्षी – मुख का मार्ग संकीर्ण होने से हवा घर्षण (रगड़) खाकर निकलने से संघर्षी ध्वनियाँ उच्चरित होती हैं। ऐसी स्थिति में हवा में उष्णता आने से इन्हें 'उष्म' ध्वनि भी कहते हैं। श, ष, स ऐसी ध्वनियाँ हैं।

(viii) अर्द्धस्वर – इनके उच्चारण में स्वर और व्यंजन दोनों के लक्षण मिलते हैं, जैसे– य और व।

व्यंजनों के उच्चारण के और दो आधार भी हैं –

(i) प्राणत्व और (ii) स्वरतंत्रियों में कम्पन

(i) प्राणत्व या श्वास प्रवाह में शक्ति या मात्रा के आधार पर ध्वनियाँ अल्पप्राण या महाप्राण होती हैं। क अल्पप्राण है। ख महाप्राण है। ह प्राण ध्वनि है।

(ii) स्वरयंत्र की स्वरतंत्रियों में कम्पन के आधार पर ध्वनियाँ अघोष या सघोष होती हैं। क अघोष है, ग सघोष।

व्यंजनों का वर्गीकरण

स्थान		द्व्योष्ठ्य		दंत्योष्ठ्य		दन्त्य		वर्त्स्य		मूर्धन्य		तालव्य		कण्ठ्य		काकल्य	
प्रयत्न	प्राणत्व	अघोष	सघोष	अघोष	सघोष	अघोष	सघोष	अघोष	सघोष	अघोष	सघोष	अघोष	सघोष	अघोष	सघोष	अघोष	सघोष
स्पर्श	अल्प	प	ब			त	द			ट	ड			क	ग		
	महा	फ	भ			थ	ध			ठ	ढ			ख	घ		
स्पर्श संघर्षी	अल्प											च	ज				
	महा											छ	झ				
नासिक्य	अल्प		म				न				ण		ञ		ङ		
	महा																
पार्श्विक	अल्प								ल								
	महा																
लुण्ठित	अल्प								र								
	महा																
उत्क्षिप्त	अल्प										ड़						
	महा										ढ़						
संघर्षी	अल्प							स		ष		श					ह
	महा				फ़												
अर्द्धस्वर					व								य				

https://withteachers.in/

आपका काम : इस चार्ट के आधार पर हिंदी ध्वनियों का लक्षण सहित विवरण लिखिए ।

जैसे - 'प' स्पर्श, द्व्योष्ठ्य, अघोष, अल्पप्राण ध्वनि है ।

Q2EYFG

अच्छी हिन्दी कैसे सीखें

हम अच्छी हिन्दी कैसे सीखें? इसके लिए सरल उपाय है । हम ठीक से जान लें कि मातृभाषा ओड़िआ और हिन्दी कहाँ - कहाँ समान हैं और कहाँ भिन्न हैं । उससे हिन्दी का सही उच्चारण करना और लिखना आसान हो जाएगा ।

☆ पहली बात

हिन्दी और ओड़िआ में स्वर ध्वनियाँ और मात्राएँ लगभग समान हैं । कुछ फर्क है - उन पर ध्यान दें ।

दोनों भाषाओं में ह्रस्व और दीर्घ स्वर हैं । देखने में ये बराबर लगते हैं । लेकिन इनका उच्चारण भिन्न होता है । ओड़िआ बोलते समय ह्रस्व-दीर्घ उच्चारण पर ध्यान नहीं दिया जाता, जबकि हिन्दी भाषी इनका स्पष्ट उच्चारण करते हैं । दीर्घ स्वर पर दुगुना समय लगाना चाहिए ।

हिन्दी अ ओड़िआ की तुलना में अधिक ह्रस्व होता है ।

ह्रस्व और दीर्घ स्वर के उच्चारण भेद का अभ्यास करें !

कल - काल, रज - राज, कमल - कमाल

तिन - तीन, कि - की, दिन - दीन

कुल -कूल, बहुत - बहू, हुँ - हूँ

ओड़िआ में ह्रस्व स्वर और दीर्घ स्वर के उच्चारण में समान समय लगता है ।

https://withteachers.in/

'ऋ' का उच्चारण हिन्दी में 'रि' जैसा और ओड़िआ में रु जैसा होता है, जैसे :-

शब्द	हिंदी उच्चारण	ओड़िआ उच्चारण
ऋषि	रिषि	रुषि
ऋतु	रितु	रुतु
अमृत	अम्रित	अम्रृत

'ऐ', और 'औ' हिंदी में मूलस्वर हैं तथा संयुक्तस्वर भी — ऐ (अ+इ) तथा औ (अ + उ)

✯ **हिंदी मूलस्वर :** ऐसा, ऐनक, पैसा, मैना
औरत, पौधा, मौत, लौटना

इनका विशेष अभ्यास करना जरूरी है।

✯ **हिंदी संयुक्ताक्षर** - 'या' के पूर्व ऐ (अ + इ), (अ + ए) जैसा और 'आ /वा' के पूर्व औ (अ + उ), (अ + ओ) जैसा उच्चरित होते हैं,

जैसे - कन्हैया, दैया, नैया, भैया
कौआ, पौवा, हौवा

ओड़िआ में : ऐ और औ मूल स्वर नहीं हैं। केवल इनके संयुक्त रूप - अइ, अउ ही उच्चरित होते हैं, यद्यपि ऐ औ लिखे जाते हैं।

'य' का उच्चारण हिंदी में ज नहीं होता, जबकि ओड़िआ में शब्द के आरंभ में, उपसर्गयुक्त होने पर तथा संयुक्त वर्ण होने पर उच्चारण ज होता है, जैसे -

शब्द	हिन्दी उच्चारण	ओड़िआ उच्चारण
यमुना	यमुना	जमुना
संयोग	संयोग	संजोग
सूर्य	सूर्य	सूर्ज्य

https://withteachers.in/

किन्तु हिंदी तथा ओड़िआ में शब्द की मध्य तथा अन्त स्थिति में 'य' का उच्चारण होता है। ओड़िआ में 'य' के लिए अलग लिपि चिह्न है।

शब्द	हिन्दी उच्चारण	ओड़िआ उच्चारण
काया	काया	काया
मायामय	मायामय	मायामय

'ल' का उच्चारण हिंदी में 'ल' ही होता है जबकि ओड़िआ में 'ल' और 'ळ' दो ध्वनियाँ हैं । ओड़िआ 'ळ' का हिंदी में 'ल' जैसा ही होता है, जैसे सरल, फल, हल, जल, कलकल आदि

'व' का उच्चारण हिंदी में 'व' होता है जबकि ओड़िआ में 'ब' होता है, जैसे–

शब्द	हिन्दी उच्चारण	ओड़िआ उच्चारण
वन	वन	बन
वायु	वायु	बायु
कविता	कविता	कबिता

अंग्रेजी की ध्वनि 'व' को लिखने के लिए ओड़िआ में अलग लिपि चिह्न का व्यवहार किया जाता है।

इन शब्दों का उच्चारण कीजिए और उच्चारण भेद पहचानिए :

बहन- वहन, बार - वार, बात - वात, बजना - वजन

हिंदी और ओड़िआ दोनों में श, ष, स, वर्ण हैं लेकिन इनके उच्चारण में अन्तर है। हिंदी में 'श' बोलते समय जीभ की नोंक को तालु के पास ले जाना पड़ता है। 'स' बोलते समय जीभ दन्तमूल के पास चली जाती है। निम्न शब्दों का उच्चारण करके अन्तर को समझें –

राशि, सीसा, श्मशान, सस्ता, शाम, साम (वेद)

https://withteachers.in/

'ष' का उच्चारण अधिकतर लोग 'श' जैसा कर देते हैं। परन्तु कोशिश करके इसका मूर्धन्य उच्चारण किया जा सकता है, जैसे –

धनुष, षष्ठी, शेष, अष्टम

'ह' सघोष है, पर शब्द के अन्त में सामान्य रूप से इसका अघोष उच्चारण हो जाता है, जैसे–

ग्यारह, बारह, राह, स्नेह

'ह' के पहले आनेवाले 'अ' का एँ (=ह्रस्व ए) जैसा उच्चारण होता है;

जैसे – कहना, नहर, पहले, पहचान, बहन, रहना का क्रमशः केहना, नेहर, पेहले, पेहचान, बेहन, रेहना, जैसा होता है।

'क्ष' का उच्चारण हिन्दी में क्‌ष जैसा होता है, जब कि ओड़िआ में इसका उच्चारण 'ख्य' है।

<u>शब्द</u>	<u>हिन्दी उच्चारण</u>	<u>ओड़िआ उच्चारण</u>
चक्षु	चक्‌षु	चख्यु
परीक्षा	परीक्‌षा	परिख्या

'ज्ञ' का उच्चारण हिंदी में ग्य जैसा होता है,

जैसे – यग्य, आग्या, प्रतिग्या आदि। कुछ लोग ग्यँ या ज्यँ भी उच्चारण करते हैं।

अनुस्वार (ं) और विसर्ग (:) को सामान्यत: अं, अ: के रूप में लिखा जाता है। इन्हें न स्वर माना जाता है और न व्यंजन। इसलिए इन्हें 'अयोगवाह' कहा जाता है। अनुस्वार का उच्चारण इसके बाद के व्यंजन की नासिक्य ध्वनि की तरह होता है। विसर्ग 'ह' का अघोष रूप है। विसर्ग का उच्चारण शब्द के अन्त में तथा उपसर्ग के अन्त में 'ह' होता है। जैसे प्रायः (प्रायह्), विशेषतः

https://withteachers.in/

(विशेषतह्), अधःपतन (अधह्पतन) जबकि शब्द के मध्य में इसका उच्चारण नहीं होता, जैसे– दुःख (दुख) ।

शब्दों का उच्चारण :

(i) दो वर्णों वाले शब्दों के अंतिम व्यंजन का उच्चारण हलन्त होता है; जैसे – काम्, राम्, बात्, कम्, बाल्, छाल् आदि

(ii) तीन वर्णों वाले शब्दों का अंतिम व्यंजन हलन्त उच्चरित होता है; जैसे— कमल्, कलम्

(iii) चार वर्णों वाले शब्दों की दूसरी और अंतिम व्यंजन ध्वनि हलन्त उच्चरित होती है;

जैसे – झट्पट्, चम्चम्, मल्मल्, कल्कल् आदि

(iv) अंतिम अ का उच्चारण नहीं होता ।

लेखन (वर्तनी)

लिखित ध्वनिक्रम को वर्तनी कहते हैं। इसे हिज्जे या वर्ण-विन्यास भी कहते हैं। हिंदी और ओड़िआ दोनों भाषाओं के अधिकांश शब्द संस्कृत से आये हैं। ऐसे शब्दों को **तत्सम** शब्द कहते हैं। अतएव उनकी वर्तनी दोनों भाषाओं में लगभग समान होती है। कहीं-कहीं भिन्नता भी पाई जाती है। उन्हें जानना चाहिए। अनेक शब्दों के रूप दोनों भाषाओं में बदल भी गये हैं। उन्हें **तद्भव** शब्द कहते हैं। कुछ शब्द अंग्रेजी, अरबी, फारसी, आदि भाषाओं से आये हैं। उन्हें **विदेशी** शब्द कहते हैं। ऐसे शब्दों की वर्तनी हिन्दी और ओड़िआ में कहीं-कहीं अलग हो जाती है।

हर भाषा की अपनी प्रकृति होती है। इस दृष्टि से शब्द की वर्तनी भी बदलती है। दूसरी भाषा के रूप में हिन्दी सीखते समय अपनी मातृभाषा की वर्तनी का प्रभाव पड़ सकता है। ऐसे प्रभाव से बचकर हिन्दी की शुद्ध वर्तनी का प्रयोग करना चाहिए।

https://withteachers.in/

अनुनासिकता और अनुस्वार

अनुनासिकता : सभी स्वर अनुनासिक हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में हवा मुखविवर और नासिका विवर दोनों विवरों से निकलती है। लिखते समय अनुनासिकता को दो प्रकार से लिखा जाता है- (i) चन्द्रबिंदु (ँ) द्वारा, (ii) बिंदु (ं) द्वारा

(i) चन्द्रबिंदु का प्रयोग शिरोरेखा के ऊपर मात्रा न होने पर होता है; जैसे— धुआँ, गाँव, साँप, नदियाँ, मालाएँ, जाऊँगा, जहाँ, कहाँ, हूँ।

(ii) बिन्दु का प्रयोग शिरोरेखा के ऊपर कोई मात्रा होने पर होता है; जैसे— सिंचाई, ईंट, नींद, मैं, हैं, चौंकना, भौंह, बच्चों, पढ़ीं, क्योंकि में।

अनुस्वार - नासिक्य व्यंजन अर्द्धव्यंजन के रूप में वर्गीय व्यंजनों के साथ संयुक्त होने पर विकल्प में अनुस्वार का प्रयोग होता है। जैसे - गङ्गा-गंगा, चञ्चल-चंचल, दण्ड-दंड, नन्द- नंद, कम्पन - कंपन आदि।

Q2NUH4

रूप विचार

(शब्दों के रूप परिवर्तन)

तू कल वहाँ बड़ा कमरा अवश्य ले।

तुझे कल वहाँ बड़े कमरे अवश्य लेने पड़ेंगे।

यहाँ दो वाक्य दिये गये हैं। पहले वाक्य में सात पद हैं। ये सातों पद मूल रूप में हैं। दूसरे वाक्य में उनमें से चार पद मूल रूप में नहीं रहे । उनमें परिवर्त्तन या विकार हो गया है, जबकि तीन में परिवर्त्तन या विकार नहीं हुआ है।

मूल रूप	**परिवर्त्तित रूप**
तू	तू+ को = तुझे
बड़ा	बड़ा+ए = बड़े

https://withteachers.in/

कमरा	कमरा + ए = कमरे
ले	ले + ने = लेने (पड़ेंगे)

मूल रूप	**अपरिवर्त्तित रूप**
कल	कल
वहाँ	वहाँ
अवश्य	अवश्य

वाक्य में आने पर शब्दों के रूप बदलते जाते हैं। अतएव शब्द के दो रूप हैं —

१ - मूल रूप या अविकारी २ - विकारी रूप या परिवर्त्तित रूप।

शब्दों का रूप-परिवर्त्तन लिंग, वचन, पुरुष, कारक, काल के कारण हो जाता है, जैसे —

✯ लिंग के कारण -	लड़का - लड़की
	अच्छा - अच्छी
	मेरा - मेरी
	पढ़ता - पढ़ती
✯ वचन के कारण -	लड़का - लड़के
	अच्छा- अच्छे
	मेरा - मेरे
	पढ़ता - पढ़ते
✯ पुरुष के कारण -	मैं - हम
	तू - तुम / आप
	वह - वे
	यह - ये

https://withteachers.in/

★ कारक के कारण - कमरा - कमरे में

छोटा लड़का - छोटे लड़के को

वह - उसने, उसे

वे - उन्होंने, उन्हें

★ काल के कारण— जाता है - गया - जाएगा

पढ़ता हूँ - पढ़ा - पढ़ूँगा

परिवर्त्तन या विकार चार प्रकार के शब्दों मे होता है। इसलिए विकारी शब्द चार प्रकार के होते हैं— संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया।

अविकारी शब्दों में कोई विकार या परिवर्त्तन नहीं होता। ये शब्द अपने मूल रूप में ही वाक्यों में प्रयुक्त होते हैं। इन्हें **'अव्यय'** कहते हैं।

ये भी चार प्रकार के होते हैं। क्रियाविशेषण, सम्बन्धबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक। इस विभाजन को निम्न सारणी द्वारा समझा जा सकता है।

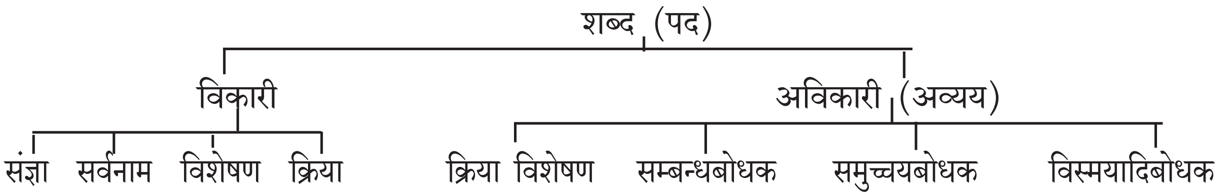

बूढ़ा हाथी आप ही धीरे-धीरे जा रहा था।

ऊपर के वाक्य में प्रयुक्त पद निम्नलिखित प्रकार के हैं —

विकारी १. संज्ञा : हाथी

२. सर्वनाम : आप

३. विशेषण : बूढ़ा

४. क्रिया : जा रहा था।

अविकारी ५. अव्यय : धीरे-धीरे, ही

https://withteachers.in/

संज्ञा

मोहन पढ़ता है ।

गाय चरती है ।

रोशन दूध पीता है ।

गोपाल कक्षा में है ।

कमला प्रार्थना करती है ।

पहले वाक्य में मोहन एक बालक (व्यक्ति) का नाम है ।

दूसरे वाक्य में गाय एक जाति विशेष का नाम है ।

तीसरे वाक्य में दूध एक द्रव्य (वस्तु) का नाम है ।

चौथे वाक्य में कक्षा एक समूह का नाम है ।

पाँचवें वाक्य में प्रार्थना एक भाव विशेष का नाम है ।

ये शब्द– मोहन, गाय, दूध, कक्षा, प्रार्थना कोई न कोई नाम बताते हैं। नाम को संज्ञा कहते हैं ।

जो शब्द व्यक्ति, जाति, द्रव्य, समूह या भाव का बोध कराता है उसे संज्ञा कहते हैं ।

संज्ञा के पाँच प्रकार होते हैं —

(i) व्यक्तिवाचक संज्ञा (ii) जातिवाचक संज्ञा (iii) द्रव्यवाचक संज्ञा

(iv) समूहवाचक संज्ञा (v) भाववाचक संज्ञा

(i) व्यक्तिवाचक संज्ञा

केवल एक ही व्यक्ति, प्राणी या स्थान का नाम बताने वाले शब्द को व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे —

व्यक्तियों के नाम - कमला, सुनीता, रहीम, जॉन

प्राणियों के नाम - हीरामन (तोता), चेतक (घोड़ा), ऐरावत (हाथी), कपिला (गाय)

https://withteachers.in/

गाँव / शहर/ देश के नाम - रामपुर, कटक, भारत, अमेरिका, इरान

नदी/पहाड़ / झील के नाम - महानदी, गंगा, हिमालय, गंधमार्दन, चिलिका

पुस्तकों के नाम - गीता, कुरान, बाइबिल, कामायनी, रामचरितमानस

(ii) जातिवाचक संज्ञा

प्राणी, पदार्थ, प्राकृतिक तत्व आदि का सर्वसामान्य (जातिगत) नाम बतानेवाले शब्द को जातिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे —

मनुष्य - पुरुष, स्त्री, लड़का, लड़की, बच्चा, शिशु

मनुष्येतर प्राणी - पशु, पक्षी, घोड़ा, मछली, साँप, कौआ, बाघ, मक्खी

वस्तु - घर,कुर्सी, दरवाजा, बाजा, कलम, पहाड़, नदी

पद - शिक्षक, डॉक्टर, नर्स, अध्यापक, इंजीनियर, मंत्री, कवि

(iii) द्रव्यवाचक संज्ञा

द्रव्य या पदार्थ का नाम बतानेवाले शब्द को द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं। द्रव्यवाचक संज्ञा अगणनीय होती है इसे नापा या तौला जाता है; जैसे —

धातु - सोना, पीतल, ताँबा, चाँदी, लोहा, स्टील

द्रवपदार्थ - तेल, दूध, पानी, शहद, घी

द्रव्य- आटा, लकड़ी, घास, दाल, अन्न

(iv) समूहवाचक संज्ञा

प्राणियों या वस्तुओं के समूहवाचक शब्द को समूहवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे —

प्राणियों का समूह - दल, मण्डली, परिवार, सेना, भीड़, कक्षा

वस्तुओं का समूह - गुच्छा, झुण्ड, शृंखला, ढेर, पुंज, टोली

https://withteachers.in/

(v) भाववाचक संज्ञा

धर्म, गुण, अवस्था, क्रिया–व्यापार और क्रियार्थक संज्ञा का नाम बतानेवाले शब्द को भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

धर्म – गर्मी, शीतलता, मधुरता

गुण – धैर्य, क्रोध, बुद्धिमानी, ईमानदारी, सच्चाई, प्रेम

अवस्था – पीड़ा, नींद, दरिद्रता, उजाला, अंधकार, बचपन, बुढ़ापा

क्रियाव्यापार – प्रार्थना, भजन, दान, बहाव, दौड़, लिखावट, चाल

क्रियार्थकसंज्ञा – टहलना, आना, पढ़ना, रोना, देखना, हँसना

जब क्रिया संज्ञा के रूप में आती है तब उसे **क्रियार्थक संज्ञा** कहते हैं।

भाववाचक संज्ञाएँ दो प्रकार की होती हैं।

(i) मूल – प्रेम, घृणा, उत्साह, साहस, दया, क्षमा

(ii) यौगिक – ये पाँच प्रकार से बनती हैं

(क) संज्ञा से – लड़का – लड़कपन, साधु –साधुता

मुनि – मौन, मनुष्य – मनुष्यता, शिशु – शैशव

(ख) विशषण से – काला – कालिमा, चतुर – चतुराई, वीर – वीरत्व,

मीठा – मिठास, भला – भलाई

(ग) सर्वनाम से – मम – ममता / ममत्व, अहं – अहंकार,

अपना – अपनापन,

आप – आपा, निज – निजत्व

(घ) क्रिया से – मारना – मार, काटना – कटाई, लिखना – लिखावट

(ङ) अव्यय से – दूर – दूरी, निकट – निकटता

https://withteachers.in/

अभ्यास

१. संज्ञा किसे कहते हैं ? पाँच उदाहरण दीजिए।

२. नीचे 'क' स्तंभ में व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ हैं और 'ख' स्तंभ में संबंधित जातिवाचक संज्ञाएँ हैं। उनका मिलान कीजिए —

क	ख
हिमालय	घोड़ा
मोहन	पहाड़
तुलसीदास	बालिका
रीता	नदी
भारत	लड़का
चेतक	सन्त
उच्चैःश्रवा	देश
गंगा	घोड़ा

३. नीचे 'क' स्तंभ में द्रव्यवाचक संज्ञाएँ हैं और 'ख' स्तंभ में संबंधित जातिवाचक संज्ञाएँ हैं। उनका मिलान कीजिए —

क	ख
लकड़ी	नथ
सोना	चूड़ी
चाँदी	कुल्हाड़ी
काँच	मेज
लोहा	पायल

४. पाँच भाववाचक संज्ञाओं के नाम लिखिए। उनसे संबंधित जातिवाचक संज्ञाओं के नाम भी लिखिए।

५. नीचे दिये गये शब्दों से भाववाचक संज्ञाएँ बनाइए —

बच्चा, मनुष्य, काटना, साधु, निकट

https://withteachers.in/

६. नीचे दिये गये शब्दों में से व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, द्रव्यवाचक, समूहवाचक तथा भाववाचक संज्ञाओं को छाँटकर अलग-अलग कीजिए–

राम, बचपन, टोली, सीता, लड़कपन, पहाड़, विरूपा, दूध, विद्यालय, भक्तमधुविद्यापीठ, कर्णफूल, अहंकार, गुच्छा, शैशव, भीड़, घास, कवि

७. निम्नलिखित शब्द-सूची को देखिए और संज्ञा शब्दों को रेखांकित कीजिए--

रमेश, सुग्रीव, धीरे, कुर्सी, पढ़ाई, कोयल, सुनहरा, चाँदी, नदी, अमेरिका, मीठा, कवित्व, पाठ, सुन्दर, गेहूँ, चंद्रमा, हवाई, लाल, कालिमा, पहाड़, पशु, अत्याचार, ईमानदार, भलाई, जूते, पिटाई, लोभी, तब, लोग, सभ्यता, अनार्य, नेत्र ।

८. अंदर <u>आना</u> मना है ।

<u>टहलना</u> सेहत के लिए अच्छा है ।

तुम्हारा <u>रोना</u> मुझे अच्छा नहीं लगता ।

ऊपर के वाक्यों में क्रिया का मूल रूप - (क्रिया + ना)

आना, टहलना, रोना संज्ञा की तरह प्रयुक्त हुए हैं ।

हम जानते हैं कि ये क्रियार्थक संज्ञाएँ हैं । इन्हें भाववाचक संज्ञा के अंतर्गत रखा जाता है ।

आप क्रियार्थक संज्ञाओं का प्रयोग करके पाँच वाक्य बनाइए ।

https://withteachers.in/

९. आप निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञा शब्द बनाइए —

लड़का -	मनुष्य -	सुन्दर -
लड़ना -	बुनना-	गुरु -
निकट -	उदार -	अच्छा -
माता -	काला -	भारत -
भला -	मधुर -	लिखना -
विशेष -	कवि -	गर्म -
परेशान -	सच्चा -	शिशु -

१०. निम्नलिखित गद्यांश में आये व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, द्रव्यवाचक, समूहवाचक और भाववाचक संज्ञाओं को छाँटकर अलग-अलग लिखिए--

गाँव के बाहर एक अमराई थी । उसमें एक कौआ और एक हिरन रहते थे । दोनों में बड़ी दोस्ती थी । दोनों सुबह जंगल में जाते थे । वहाँ पशुओं के दल और पक्षियों के झुण्ड देखते थे । उन्हें घूमना अच्छा लगता था । वे पहाड़ की चढ़ाई में चढ़ते थे । हरियाली देख कर खेलते भी थे । उनको खाने को फल मिल जाते थे । आम, अमरूद, बेर जैसे फल । लेकिन उन दोनों को फल अच्छे नहीं लगते थे । कौआ मांस के टुकड़े या मरी जोंक पकड़ता था । हिरन हरी हरी घास खाता था । दोनों की मित्रता बढ़ती जाती थी ।

११. निम्नलिखित व्यक्ति, द्रव्य या जातिवाचक संज्ञाओं को उनसे संबंधित जातिवाचक संज्ञाओं से जोड़िए —

राम	धातु
हिमालय	कवि
घोड़ा	स्त्री

https://withteachers.in/

कोयल	पशु
सीता	पहाड़
कालिदास	नदी
सोना	देव
महानदी	पक्षी
इन्द्र	आदमी
रामायण	पुस्तक

१२. क्रियावाचक संज्ञाएँ भाववाचक संज्ञाओं के अंतर्गत रखी जाती हैं। क्या आप ऐसी क्रियार्थक संज्ञाएँ बना सकते हैं ?

पहाड़ पर चढ़ना मजेदार है।

रोज साफ पानी पीना चाहिए।

मुझे रसोई बनाना आता है।

ऐसे पाँच वाक्य लिखिए।

■ ■ ■

https://withteachers.in/

संज्ञा का परिवर्त्तन या विकार

संज्ञाओं में परिवर्त्तन तीन कारणों से होता है —

(i) लिंग के कारण

(ii) वचन के कारण

(iii) कारक के कारण

Q37LKE

लिंग

लिंग का अर्थ है चिह्न । जिस चिह्न से जाति के होने का बोध होता है, उसे लिंग कहते हैं। कोई शब्द स्त्री जाति अथवा पुरुष जाति के होते हैं । हिंदी में दो ही लिंग हैं - पुंलिंग और स्त्रीलिंग। हिन्दी में चेतन (मानव या मानवेतर), अचेतन (वस्तु या भाव) सभी को दो वर्गों में बाँट दिया जाता है, अर्थात् उन्हें पुंलिंग या स्त्रीलिंग में रखा जाता है।

मानव वर्ग के लिंग निर्णय में कठिनाई नहीं होती, जैसे —

✭ पुंलिंग - पुरुष, धोबी, बाप, बेटा, नाना, फूफा, नेता, दाता

✭ स्त्रीलिंग - स्त्री, धोबिन, माँ, बेटी, नानी, फूफी, नेत्री, दात्री

कुछ मानवेतर प्राणियों का लिंग-निर्णय करना भी आसान है, जैसे —

✭ पुंलिंग - हाथी, बकरा, शेर, बाघ, बैल, साँड़, भैंसा, भेड़ा, ऊँट

✭ स्त्रीलिंग - हथिनी, बकरी, शेरनी, बाघिन, गाय, भैंस, भेड़, ऊँटनी

मानवेतर प्राणियों में कुछ ऐसे प्राणी हैं, जो केवल पुंलिंग या केवल स्त्रीलिंग में ही प्रयुक्त होते हैं, जैसे —

✭ पुंलिंग - कौआ, मच्छड़, पक्षी, तोता, नेवला, बाज, केंचुआ

✭ स्त्रीलिंग - कोयल, मक्खी, चिड़िया, मैना, गिलहरी, चील, जोंक

इन शब्दों का लिंग स्पष्ट करने के लिए नर या मादा शब्द जोड़ा जाता है, जैसे- नर कौआ - मादा कौआ। नर कोयल - मादा कोयल।

अतएव हिन्दी के प्रत्येक शब्द का लिंग जानना जरूरी है । हम शब्द जानें तो उसका लिंग भी जान लें ।

https://withteachers.in/

लिंग निर्णय के विविध आधार होते हैं —

(i) शब्द वर्ग के आधार पर

(ii) शब्दान्त मात्रा के आधार पर

शब्द वर्ग के आधार पर पुंलिंग

(क) शरीर वर्ग - ओंठ, कान, बाल, नाखून, खून, हाथ, पाँव, दाँत,
अपवाद - आँख, नाक, जीभ, पीठ, जाँघ, नस, कोहनी, हड्डी

(ख) भोजन वर्ग - लड्डू, समोसा, पकौड़ा, पेठा, पेड़ा, रसगुल्ला, भात
अपवाद - दाल, रोटी, पुड़ी, चपाती, सब्जी, खीर, कचौड़ी, जलेबी, रसमलाई, खिचड़ी, तरकारी

(ग) फल वर्ग - आम, पपीता, खरबूजा, सेव, संतरा, केला, अंगूर
अपवाद - लीची, नारंगी, ककड़ी, नाशपाती

(घ) रत्न वर्ग - मोती, माणिक, पन्ना, हीरा, जवाहिर, मूँगा, नीलम, पुखराज
अपवाद - मणि

(ङ) धातु वर्ग - ताँबा, लोहा, सोना, सीसा, काँसा, पीतल, टीन, राँगा
अपवाद - चाँदी

(च) शस्य वर्ग - जौ, चावल, गेहूँ, बाजरा, धान, चना, तिल
अपवाद - मकई, जुआर, मूँग, अरहर, खेसारी

(छ) ग्रह वर्ग - सूर्य, चन्द्रमा, शुक्र, मंगल, शनि, वृहस्पति
अपवाद - पृथ्वी

(ज) वर्ण वर्ग - अ, आ, उ, ऊ
अपवाद - इ, ई, ऋ

(झ) जल-स्थल वर्ग- पहाड़, पर्वत, रेगिस्थान, द्वीप, समुद्र, सरोवर, हिमालय
अपवाद - तराई, घाटी, नदी, पहाड़ी, झील

(ञ) द्रव पदार्थ वर्ग - शरबत, घी, तेल, जल, पानी, दूध, दही, मट्ठा
अपवाद - चाय, कॉफी, छाछ, स्याही, शराब

(ट) वृक्ष वर्ग - आम, कटहल, देवदार, बरगद, चीड़, शीशम, सागौन, अशोक
अपवाद - खिरनी, इमली, मौलसिरी

https://withteachers.in/

शब्द वर्ग के आधार पर स्त्रीलिंग

(क) नदी वर्ग – गंगा, यमुना, महानदी, ऋषिकुल्या, झेलम, राबी
अपवाद – सोन, सिंधु, ब्रह्मपुत्र

(ख) नक्षत्र वर्ग – अश्विनी, रोहिणी, विशाखा, पूर्वाषाढ़ा

(ग) भाषा वर्ग – ओड़िआ, हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी

(घ) तिथि वर्ग – तृतीया, अमावास्या, पूर्णिमा

(ङ) दुकान–सामग्री वर्ग – इलायची, लौंग, सुपारी, हल्दी, हींग
अपवाद – तेजपात, कपूर, मसाला, धनिया, जीरा, नमक

शब्दान्त मात्रा के आधार पर पुंलिंग

✯ अ, अन, आस, आर, आय, ख, ज त, त्य, त्व, त्र, न व, य, से अन्त होनेवाले तत्सम शब्द; जैसे —

त्याग, क्रोध, दोष, वचन, साधन, विकास, ह्रास, विकार, संसार, उपाय, अध्याय, मुख, शंख, सरोज, पंकज, गीत, स्वागत, नृत्य, साहित्य, सतीत्व, महत्त्व, नेत्र, पवित्र, प्रश्न, पालन, गौरव, लाघव, कार्य, धैर्य

अपवाद — विजय, विद्युत, आय

✯ आ, आन, आव, आवा, आर, ना (क्रियार्थक सज्ञाएँ), आब, खाना, न, दान, पन, पा, से अन्त होने वाले हिन्दी / उर्दू शब्द; जैसे —

झगड़ा, लगान, मिलान, बहाव, चढ़ाव, बढ़ावा, भुलावा, इनकार, पढ़ना, आना, हिसाब, गुलाब, डाकखाना, जेलखाना, खत, फूलदान, पीकदान, बचपन, कालापन, बुढ़ापा, पुजापा

अपवाद - उड़ान, पहचान, किताब, शराब, दुकान, सरकार

शब्दान्तमात्रा के आधार पर स्त्रीलिंग

✯ आ, इ, इमा, उ, ता, ति, ना, नि, या, सा से अन्त होनेवाले तत्सम शब्द; जैसे—

पूजा, प्रतिमा, छवि, विधि, गरिमा, महिमा, मृत्यु, ऋतु, स्वतंत्रता, साधुता, गति, रीति, रचना, प्रार्थना, हानि, ग्लानि, विद्या, क्रिया, मीमांसा, जिज्ञासा

https://withteachers.in/

★ अन, आ, ईर, ईल, आई, ई, इया, ऊ, ख, त, श, स, वट, हट, ह से अन्त होनेवाले हिन्दी / उर्दू शब्द; जैसे –

जलन, सूजन, दवा, दुनिया, जागीर, तस्वीर, तामील, तहसील, पढ़ाई, कटाई, गरीबी, बीमारी, खटिया, गुड़िया, झाड़ू, बालू, चीख, भूख, इज्जत, कीमत, कोशिश, बारिश, प्यास, सजावट, लिखावट, चिकनाहट, चिल्लाहट, सलाह, सुबह

अपवाद - होश, चालचलन, ताश, दस्तखत, वक्त, माह, गुनाह

लिंग परिवर्त्तन के नियम

पुंलिंग शब्दों को स्त्रीलिंग में परिवर्तन करने के लिए जो प्रत्यय लगते हैं, उन्हें स्त्री प्रत्यय कहते हैं। ऐसे भी कुछ शब्द हैं जिनके पुंलिंग रूप तथा स्त्रीलिंग रूप पूरी तरह अलग अलग होते हैं। नीचे लिंग परिवर्त्तन के कुछ नियम दिये जा रहे हैं –

१. अकारांत शब्दों में 'आ' जोड़कर –

पुंलिंग	स्त्रीलिंग	पुंलिंग	स्त्रीलिंग
वृद्ध	वृद्धा	सुत	सुता
प्रिय	प्रिया	प्रियतम	प्रियतमा
शिष्य	शिष्या	तनय	तनया
कनिष्ठ	कनिष्ठा	छात्र	छात्रा

२. अकारांत शब्दों में 'ई' जोड़कर –

पुंलिंग	स्त्रीलिंग	पुंलिंग	स्त्रीलिंग
देव	देवी	हंस	हंसी
पुत्र	पुत्री	हिरन	हिरनी
कुमार	कुमारी	ब्राह्मण	ब्राह्मणी
दास	दासी	मेंढक	मेंढकी

https://withteachers.in/

३. आकारंत शब्दों में 'ई' जोड़कर –

पुंलिंग	स्त्रीलिंग	पुंलिंग	स्त्रीलिंग
लड़का	लड़की	बकरा	बकरी
दादा	दादी	भतीजा	भतीजी
बेटा	बेटी	बूढ़ा	बूढ़ी
घोड़ा	घोड़ी	मामा	मामी

४. अकारांत शब्दों में 'इया' जोड़कर –

पुंलिंग	स्त्रीलिंग	पुंलिंग	स्त्रीलिंग
कुत्ता	कुतिया	गुड्डा	गुड़िया
बूढ़ा	बुढ़िया	बन्दर	बन्दरिया
बेटा	बिटिया	बाछा	बछिया
चूहा	चुहिया	लोटा	लुटिया

५. कुछ प्राणिवाचक और व्यवसायवाचक शब्दों में 'इन' जोड़कर –

पुंलिंग	स्त्रीलिंग	पुंलिंग	स्त्रीलिंग
बाघ	बाघिन	नाई	नाइन
साँप	साँपिन	तेली	तेलिन
नाग	नागिन	धोबी	धोबिन
सुनार	सुनारिन	नाती	नातिन

६. कुछ प्राणिवाचक शब्दों में 'नी' जोड़कर –

पुंलिंग	स्त्रीलिंग	पुंलिंग	स्त्रीलिंग
मोर	मोरनी	हाथी	हथिनी
शेर	शेरनी	सिंह	सिंहनी
ऊँट	ऊँटनी	जाट	जाटनी
स्यार	स्यारनी	गरीब	गरीबनी

https://withteachers.in/

७. कुछ प्राणिवाचक शब्दों में 'आनी' जोड़कर –

पुंलिंग	स्त्रीलिंग	पुंलिंग	स्त्रीलिंग
देवर	देवरानी	नौकर	नौकरानी
जेठ	जेठानी	सेठ	सेठानी
चौधरी	चौधरानी	मेहतर	मेहतरानी

८. शब्दान्त 'अक' को 'इका' बनाकर –

पुंलिंग	स्त्रीलिंग	पुंलिंग	स्त्रीलिंग
पाठक	पाठिका	सेवक	सेविका
बालक	बालिका	अध्यापक	अध्यापिका
लेखक	लेखिका	नायक	नायिका
कारक	कारिका	पाचक	पाचिका

९. शब्दान्त 'ई' को 'इनी' बनाकर –

पुंलिंग	स्त्रीलिंग	पुंलिंग	स्त्रीलिंग
तपस्वी	तपस्विनी	स्वामी	स्वामिनी

१०. शब्दान्त में 'आइन' जोड़कर –

लाला	ललाइन	ठाकुर	ठकुराइन

११. शब्दान्त वान/मान को वती/मती बनाकर –

पुंलिंग	स्त्रीलिंग	पुंलिंग	स्त्रीलिंग
धनवान	धनवती	श्रीमान	श्रीमती
ज्ञानवान	ज्ञानवती	शक्तिमान	शक्तिमती
बलवान	बलवती	आयुष्मान	आयुष्मती
भाग्यवान	भाग्यवती	बुद्धिमान	बुद्धिमती

१२. पुंलिंग बनाने के लिए कुछ स्त्रीलिंग शब्दों में प्रत्यय लगाकर –

पुंलिंग	स्त्रीलिंग	पुंलिंग	स्त्रीलिंग
ननदोई	ननद	भेड़ा	भेड़
बहनोई	बहन	भैंसा	भैंस

https://withteachers.in/

१३. कुछ शब्दों में 'नर' और 'मादा' शब्द जोड़कर –

पुंलिंग	स्त्रीलिंग	पुंलिंग	स्त्रीलिंग
नर कोयल	मादा कोयल	नर कौआ	मादा कौआ
नर गिलहरी	मादा गिलहरी	नर खरगोश	मादा खरगोश

१४. पुंलिंग और स्त्रीलिंग के लिए अलग अलग शब्दों का व्यवहार –

पुंलिंग	स्त्रीलिंग	पुंलिंग	स्त्रीलिंग
पिता	माता	युवक	युवती
भाई	बहन / भाभी	वर	वधू
मर्द/आदमी	औरत	बैल/साँड़	गाय
राजा	रानी	साहब	मेम
बाप	माँ	नर	मादा
ससुर	सास	पुत्र	कन्या
पति	पत्नी	बादशाह	बेगम
पुरुष	स्त्री	दाता	दात्री
विद्वान	विदुषी	कवि	कवयित्री
सम्राट	सम्राज्ञी	भ्राता	भग्नि
विधुर	विधवा	जनक	जननी

अभ्यास

१. नीचे लिखे वाक्यों की रेखांकित संज्ञाओं के लिंग बताइए –

(i) आसमान में बादल घिर आये।

(ii) दूर का पहाड़ सुन्दर लगता है।

(iii) मेरी परीक्षा पन्द्रह दिन सरक गयी है।

(iv) आपके घर की छत से पानी रिसता है।

(v) मैंने उसकी सुन्दरता की सराहना की।

(vi) हम देश की इज्जत की रक्षा करेंगे।

https://withteachers.in/

(vii) आज दाल थोड़ी सी पतली हो गयी है।

(viii) आपको शराब नहीं पीनी चाहिए।

(ix) उसे लज्जा नहीं आती।

(x) दूध से दही बनता है।

२. ध्यान दीजिए कि क्रिया पदों का लिंग कर्म के स्थान पर आई संज्ञा के अनुसार है। निम्न सारणी के शब्दों से सही वाक्य बनाइए –

मोहन ने	साबुन	खरीदा।
बहेलिए ने	बाण	चलाया।
राजू ने	किताब	खरीदी।
गोपाल ने	साइकिल	चलायी।
उसने	मेज	बनायी।
आपने	चित्र	बनाया।
सीता ने	कलम	खो दी।
गीता ने	रबड़	खो दिया।
उसमें	धैर्य	नहीं था।
उसमें	शक्ति	नहीं थी।

३. नीचे लिखी गयी संज्ञाओं के पहले विशेषण अच्छा या अच्छी का उचित प्रयोग कीजिए :

हिन्दी, घड़ी, इमारत, नौकरी, दया, परदा, गाड़ी, झाड़ू, प्रथा, नतीजा, दुकान

४. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बदलिए –

बेटी, भगवान, स्त्री, पुत्र, घोड़ा, मनुष्य, साँप, बच्चा, युवक, छात्र

५. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बताइए –

आँख, शरीर, इज्जत, कहानी, बात, झगड़ा, भीख, तलवार, खेत, नौकरी

६. आप अपनी पाठ्यपुस्तक से कुछ अप्राणिवाचक शब्द चुनिए और उनके लिंग भी जानिए।

https://withteachers.in/

७. **देखिए मज़ा –**

ग्रन्थ – पुंलिंग	पुस्तक – स्त्री लिंग
	किताब – स्त्री लिंग
जल – पुंलिंग	
मेघ – पुंलिंग	
पानी – पुंलिंग	धानी – स्त्री लिंग
पवन – पुंलिंग	हवा – स्त्री लिंग
शहर – पुंलिंग	नहर – स्त्री लिंग
थाल – पुंलिंग	दाल – स्त्री लिंग
	बिजली – स्त्री लिंग
	इमली – स्त्री लिंग
सरौता – पुंलिंग	सरिता – स्त्री लिंग
	नदी – स्त्री लिंग
आरा – पुंलिंग	धारा – स्त्री लिंग
पर्वत – पुंलिंग	
पहाड़ – पुंलिंग	
वन – पुंलिंग	
गोंद – पुंलिंग	गेंद – स्त्री लिंग
बल्ला – पुंलिंग	
जौ – पुंलिंग	गौ – स्त्री लिंग
कौआ – पुंलिंग	कोयल – स्त्री लिंग
कुर्ता – पुंलिंग,	कमीज – स्त्री लिंग
लहंगा – पुंलिंग	साड़ी – स्त्री लिंग
परमात्मा – पुंलिंग	आत्मा – स्त्री लिंग
भात – पुंलिंग	बात – स्त्री लिंग

पाठ्य विषयों से ऐसे शब्द छाँटिए और उनका लिंग जानिए ।

https://withteachers.in/

८. ध्यान दीजिए कि संज्ञा के लिंग के अनुसार क्रिया भी बदलती है —

घोड़ा दौड़ता है ।	घोड़ी घास खाती है ।
लड़का खाता है ।	लड़की खाती है ।
पवन चलता है ।	हवा चलती है ।
बड़ी गर्मी लगती है ।	दिसंबर में जाड़ा बढ़ जाता है ।
उसके हाथ लंबे हैं ।	उसकी मूँछ लंबी है ।

इन वाक्यों को पढ़ने से साफ जाहिर होता है कि हिंदी में हर संज्ञा पद का लिंग होता है । प्राणिवाचक शब्दों में लिंग जान लेना आसान है, मगर अप्राणिवाचक वस्तुओं का लिंग भी जानना जरूरी है । भाषा के प्रयोग में अभ्यास करने पर यह मालूम पड़ जाता है । लेकिन शुरू में प्रत्येक शब्द का लिंग जान लेना जरूरी होता है । आप ऐसे शब्दों का प्रयोग करके दस वाक्य बनाइए ।

निम्नलिखित शब्दों के पुंलिंग रूप लिखिए :

धोबिन	मालिन	नौकरानी
डाक्टरानी	मास्टरानी	देवरानी
बालिका	औरत	सास
नानी	दादी	पुत्री
शिष्या	बच्ची	माता
शेरनी	मोरनी	भैंस
भेड़	बकरी	मुर्गी
चाची	बहिन	भानजी
ऊँटनी	मालकिन	सम्राज्ञी
सेठानी	मेहतरानी	हथिनी
श्रीमती	विदुषी	तपस्विनी
बेगम	पत्नी	भाभी
वधू	गुणवती	स्वामिनी
सेविका	लेखिका	गायिका
अध्यापिका	पाठिका	नायिका
ननद	कवयित्री	बाघिन
भिखारिन	भगवती	युवती
देवी	मानवी	राक्षसी

https://withteachers.in/

(ii) वचन

किसी शब्द के जिस रूप से उस की संख्या (एक या अनेक) को बोध होता है, उसे वचन कहते हैं । संज्ञा शब्दों के आधार पर विशेषण, सर्वनाम और क्रिया के वचन बदलते हैं ।

वचन दो प्रकार के हैं (i) एकवचन (ii) बहुवचन

(i) एकवचन - जिस संज्ञा शब्द से एक प्राणी या एक वस्तु का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं; जैसे — घोड़ा, पुत्र, पुस्तक, माला

(ii) बहुवचन - जिस संज्ञा शब्द से एक से अधिक प्राणियों या वस्तुओं का बोध होता है उसे बहुवचन कहते हैं; जैसे — घोड़े, पुत्र, पुस्तकें, मालाएँ ।

प्रत्येक संज्ञा के तीन-तीन रूप उपलब्ध होते हैं —

(क) मूल रूप (परसर्ग रहित); जैसे — लड़का, बालिका आदि

(ख) परसर्गयुक्त रूप; जैसे — लड़के को, बालिकाओं का आदि

(ग) सम्बोधन रूप; जैसे — हे लोगो, अरी बहनो आदि

शब्दान्त मात्रा की दृष्टि से पुंलिंग शब्दों के बहुवचन में दो वर्ग पाये जाते हैं —

(i) आकारांत शब्द ('लड़का' वर्ग) (पुंलिंग आकारन्त)

(ii) अन्यमात्रा के शब्द ('बालक' वर्ग) (पुंलिंग अन्य सभी मात्रान्त)

स्त्रीलिंग बहुवचन में भी दो वर्ग पाये जाते हैं —

(i) इ/ ई कारान्त तथा 'या' में अंत होने वाले शब्द (लड़की वर्ग)

(ii) अन्य मात्रा के शब्द (बालिका वर्ग)

वचन परिवर्त्तन के नियम

नियम- १ (लड़का वर्ग)

परसर्ग रहित संज्ञा रूप

एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
लड़का	लड़के	घोड़ा	घोड़े
बच्चा	बच्चे	पंखा	पंखे

https://withteachers.in/

बकरा	बकरे	कमरा	कमरे

(देखिए – एकवचन की 'आ' मात्रा बहुवचन में 'ए' हो जाती है)

अभिनेता, कर्त्ता, दाता, देवता, पिता, योद्धा, राजा, विक्रेता, सखा, काका, जीजा, दादा, नाना, पापा, फूफा, मामा, अब्बा, अल्ला आदि शब्द दोनों वचनों मे समान रहते हैं ।

परसर्ग सहित संज्ञा रूप

एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
लड़के ने	लड़कों ने	घोड़े का	घोड़ों का
बच्चे की	बच्चों की	पंखे में	पंखों में
बकरे से	बकरों से	कमरे के लिए	कमरों के लिए

यहाँ एकवचन में 'ए' और बहुवचन में 'ओं लगाने के बाद परसर्ग जुड़ता है । जैसे – लड़का + ए + ने = लड़के ने

घोड़ा + ओं + से = घोडों से आदि

सम्बोधन रूप

एकवचन	**बहुवचन**
लड़के !	लड़को !
बच्चे !	बच्चो !
लड़की !	लड़कियो ! (यहाँ 'ए' जोड़कर संबोधन रूप बनाया जाता है ।)

नियम – २ (बालक वर्ग)

परसर्ग रहित संज्ञा रूप

एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
बालक	बालक	गुरु	गुरु
घर	घर	भालू	भालू
मुनि	मुनि	रेडियो	रेडियो
हाथी	हाथी	फोटो	फोटो

(यहाँ एकवचन और वहुवचन किसी में कोई परिवर्त्तन नहीं होता) ।

https://withteachers.in/

याद रखिए कि पुंलिंग आकारान्त शब्द एकारान्त होते हैं । अन्य स्वरान्त शब्दों में कोई परिवर्त्तन नहीं होता ।

परसर्ग सहित संज्ञा रूप

एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
बालक ने	बालकों ने	गुरु ने	गुरुओं ने
घर का	घरों का	भालू को	भालुओं को
मुनि से	मुनियों से	रेडियो पर	रेडियों पर
हाथी पर	हाथियों पर	फोटो में	फोटों में

(यहाँ बहुवचन में इ/ई मात्रा 'यों' में और अन्य मात्राएँ 'ओं' में बदल जाती हैं । शब्दांत दीर्घमात्रा ह्रस्वमात्रा हो जाती है)

सम्बोधन रूप

एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
बालक	बालको	साथी	साथियो
मित्र	मित्रो	गुरु	गुरुओ

(यहाँ एक वचन में कोई परिवर्तन नहीं होता । बहुवचन में इ/ई मात्रान्त शब्दों के साथ 'यो' जुड़ता है । अन्य मात्रांत शब्दों में 'ओ' जुड़ता है । सभा में संबोधित करते समय सज्जनो और देवियो ! कहिए । सज्जनों और देवियों नहीं ।

नियम ३ (लड़की वर्ग)

परसर्ग रहित संज्ञा रूप

एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
लड़की	लड़कियाँ	नदी	नदियाँ
जाति	जातियाँ	तिथि	तिथियाँ
बुढ़िया	बुढ़ियाँ	खटिया	खटियाँ
गुड़िया	गुड़ियाँ	स्त्री	स्त्रियाँ

(बहुवचन में इ/ई/या का **याँ** हो जाता है और शब्दान्त दीर्घ मात्रा ह्रस्व मात्रा हो जाती है)

https://withteachers.in/

परसर्ग सहित संज्ञा रूप

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
लड़की ने	लड़कियों ने	नदी को	नदियों को
जाति से	जातियों से	तिथि में	तिथियों में
बुढ़िया का	बुढ़ियों का	खटिया पर	खटियों पर
गुड़िया के लिए	गुड़ियों के लिए	स्त्री का	स्त्रियों का

(बहुवचन में इ/ई/या का 'यों' हो जाता है और शब्दान्त दीर्घ मात्रा ह्रस्व मात्रा हो जाती है)

सम्बोधन रूप

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
लड़की	लड़कियो	देवी	देवियो
बुढ़िया	बुढ़ियो	नदी	नदियो

(यहाँ एकवचन में कोई परिवर्तन नहीं होता। बहुवचन में 'यो' जुड़ता है। यों नहीं । शब्दांत दीर्घमात्रा ह्रस्व हो जाती है)

नियम ४ (बालिका वर्ग)

परसर्ग रहित संज्ञा रूप

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
बालिका	बालिकाएँ	माला	मालाएँ
रात	रातें	बात	बातें
वस्तु	वस्तुएँ	बहू	बहुएँ
झाड़ू	झाडुएँ	गौ	गौएँ

(यहाँ एकवचन में कोई परिवर्त्तन नहीं होता। बहुवचन में 'एँ' जुड़ता है। शब्दांत की दीर्घमात्रा ह्रस्व हो जाती है ।)

ध्यान दीजिए कि स्त्रीलिंग शब्दों के बहुवचन में ये परिवर्त्तन होते हैं —

१. अकारान्त - बात, लात, तस्वीर, उम्मीद, चाल, आदि के साथ - एँ (ें) लगता है ।

https://withteachers.in/

२. इ/ ई – नदी, तिथि, नाली, मिठाई, आदि शब्दों में याँ जुड़ता है ।
३. आ/उ/ऊ / औ – नायिका, नासिका, लता, ऋतु, धेनु, झाड़ू, गौ आदि शब्दों के साथ एँ लगता है ।

परसर्ग सहित संज्ञा रूप

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
वालिका ने	बालिकाओं ने	माता को	माताओं को
रात में	रातों में	बात के लिए	बातों के लिए
वस्तु में	वस्तुओं में	बहू का	बहुओं का
झाड़ू से	झाडुओं से	गौ पर	गौओं पर

(यहाँ एकवचन में कोई परिवर्त्तन नहीं होता। बहुवचन में 'ओं' जुड़ता है। शब्दांत दीर्घ मात्रा ह्रस्व हो जाती है।)

सम्बोधन रूप

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
बालिका	बालिकाओ	माता	माताओ
बहू	बहुओ	गौ	गौओ

(यहाँ एकवचन में कोई परिवर्त्तन नही होता। बहुवचन में 'ओं' जुड़ता है। शब्दांत दीर्घमात्रा ह्रस्व हो जाती है।)

अभ्यास

१. कोष्ठक में दिये गये शब्दों में से उचित शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए–

(i) मेरे पास चार .... हैं। (किताब, किताबें, किताबों)
(ii) कल मेरे ...... आयेंगे। (चाचा, चाचे, चाचाओं)
(iii) पाँच .... जा रहे हैं। (बालक, बालकें, बालकों)
(iv) दो .... आज प्रवचन देंगे। (साधु, साधुएँ, साधुओं)
(v) सभी ..... सभा में बैठी हैं। (अध्यापिका, अध्यापिकाएँ, अध्यापिकाओं)
(vi) मेरी ....बहुत पुरानी है। (घड़ियाँ, घड़ी, घड़ियों)
(vii) मैंने उनकी सभी .... को मंदिर में देखा। (बहुएँ, बहुओं, बहू)

https://withteachers.in/

(viii) माँ के पास दो ...... हैं। (माला, मालाएँ, मालाओं)

(ix) दो....... को ताक पर रख दो। (झाड़ू, झाडुएँ, झाडुओं)

(x) हम .... की सुरक्षा करें। (गौ, गौओ, गौएँ)

२. कोष्ठक में से सही शब्द चुनकर नीचे लिखे वाक्यों के खाली स्थानों को भरिए –

(i) अब .... के पास समय नहीं है। (नेता, नेताएँ, नेताओ)

(ii) .... को दो-दो भाषाएँ मालूम हैं। (बच्चे, बच्चों, बच्चा)

(iii) सभी....... को बाड़े के अन्दर ले आओ (गौ, गौओं, गौएँ)

(iv) .... ! तुमलोग खुश रहो। (बहू, बहुओं, बहुओ)

(v) हे ....! वहाँ क्या करते हो। (बच्चा, बच्चे, बच्चों)

(vi) कालापाहाड़ ने मंदिर की सारी .....को तोड़ दिया था। (मूर्त्ति, मूर्त्तियाँ, मूर्त्तियों)

(vii) तुमने अच्छी-अच्छी .... को छाँट लिया है (तस्वीर, तस्वीरों, तस्वीरें)

(viii) मेरे .... पर हाथ रखो। (कंधा, कंधे, कंधों)

(ix) .... को पानी में डूबो देना। (तौलिया, तौलियो, तौलियों)

(x) सभी .... को बैठने के लिए आसन दो। (अतिथि, अतिथियों, अतिथिओं)

३. निम्नलिखित वाक्यों के वचन बदलिए –

(ध्यान रखिए कि सभी पदों के वचन बदल जायँ।)

(i) यह एक आदमी का काम है।

(ii) मुर्गी अण्डा देती है।

(iii) कुर्सी टूट गयी।

(iv) हे साधु! मुझे आशीर्वाद दीजिए।

(v) गाय दूध देती है।

(vi) मेरा पुत्र पढ़ रहा है।

(vii) चार देशों के प्रधानमंत्री दिल्ली में पहुँच गये हैं।

(viii) एक केले का छिलका उतार दो।

(ix) ये सभी हाथी मेरे साथी हैं।

(x) उसके एक मामा अमेरिका में रह रहे हैं।

https://withteachers.in/

४. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए

(i) मेला में सर्कस लगा है।

(ii) वर्षा ऋतु में सभी नदी में बाढ़ आती है।

(iii) लड़कियाँ में धैर्य होता है।

(iv) रेडिओं के दाम बढ़ गये हैं।

(v) क्यारियाँ में पानी दे दो।

(vi) धूप में सभी पौधा के पतों झड़ गये हैं।

(vii) तीनों पंखों नहीं चल रहे हैं।

(viii) आजकल अंग्रेजी माध्यम पाठशाला धड़ाधड़ खुल रहे हैं।

(ix) सारी वस्तु को संभालकर रखो।

(x) चिड़िया के घोंसला में दो अण्डा हैं।

५. निम्न वाक्यों में से सही वाक्य के लिए (✓) चिह्न और गलत वाक्य के लिए (✗) चिह्न लगाइए।

(i) ये पक्षी सफेद हैं।

(ii) ये चाभी नयी हैं।

(iii) मेरे सभी साथी खेल रहे हैं ।

(iv) अतिथियों का आदर करो।

(v) दातों का कल्याण हो।

(vi) हे लड़कियों! कहाँ जा रही हो?

(vii) घर के दरवाजा खुले हैं।

(viii) कुश और लव दो भाइयाँ थे।

(ix) दो भालुएँ नाच रहे हैं।

(x) तीन आमों सड़ गये हैं।

६. निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलिए :

बात, छुट्टी, तलवार, बेटी, भिक्षु, दीवार, गिलहरी, कीड़ा, रेखा, बिछू, चिड़िया, आदमी, भालू, भैंस, बकरा, बच्चा, चींटी, चूहा, भेड़, मोर, कौवा, जाति, भाषा, झाड़ू, भालू, लट्टू, औरत, स्त्री, तारा, गाड़ी

(आपको याद है न कि पुंलिंग आकारान्त शब्दों का एकारान्त में परिवर्त्तन होता है। अन्य पुंलिंग शब्दों में कोई परिवर्त्तन नहीं होता !)

सभी स्त्रीलिंग शब्दों का परिवर्तन होता है।

■ ■ ■

https://withteachers.in/

(iii) कारक

वाक्य में आये पद के साथ अन्य पदों का जो संबंध होता है, या भिन्न-भिन्न पदों के बीच जो आपसी संबंध होता है - उस संबंध को कारक कहते हैं। कारक को पहचानने के लिए जिन शब्दांशों का प्रयोग किया जाता है उन्हें कारक-चिह्न या परसर्ग कहते हैं। ऐसे संबंधों की दृष्टि से हिन्दी में आठ कारक माने जाते हैं; वे हैं – कर्त्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण और सम्बोधन। प्रत्येक कारक के अलग-अलग कारक चिह्न हैं। ये चिह्न संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के बाद आते हैं। अत: इन्हें परसर्ग भी कहते हैं। केवल सम्बोधन कारक में ये चिह्न शब्द के पहले आते हैं।

QBG9G7

कारकों के नाम	**कारक-चिह्न**
१.कर्त्ता -	ने,से,को,के
२.कर्म -	को,से
३.करण -	से
४.सम्प्रदान -	को, के लिए, के निमित्त
५.अपादान -	से,
६.सम्बन्ध -	का,के,की / रा,रे,री / ना,ने,नी
७.अधिकरण -	में, पर, को
८.सम्बोधन -	हे, अरे, ओ, जी, ए, हलो

१.कर्त्ता कारक : वाक्य में जिस पद के द्वारा क्रिया का सम्पादन होता है, उसे कर्त्ता कहते हैं; जैसे -

लीला पढ़ती है। (परसर्ग रहित)

गोपाल ने कॉपी खरीदी। (परसर्ग सहित)

मुझसे चला नहीं जाता। (परसर्ग सहित)

आपको जाना पड़ेगा। (परसर्ग सहित)

सुधा के एक बेटा है। (परसर्ग सहित)

https://withteachers.in/

२. कर्म कारक : जिस संज्ञा या सर्वनाम पर क्रिया–व्यापार का फल या प्रभाव पड़ता है, वह कर्म कारक होता है; जैसे –

लड़का फल खाता है। (परसर्ग रहित)

माँ बेटे को बुलाती है। (परसर्ग सहित)

छात्र शिक्षक से पूछता है। (परसर्ग सहित)

(कर्म दो प्रकार के होते हैं – (i) मुख्य कर्म (अप्राणिवाचक कर्म)

(ii) गौण कर्म (प्राणिवाचक कर्म)

३. करण कारक : जिस संज्ञा या सर्वनाम पद से क्रिया के साधन का बोध होता है, उसे करण कारक कहते हैं; जैसे –

मैं कलम से लिखता हूँ।

तुम पत्र के द्वारा यह बात बता दो।

४. सम्प्रदान कारक : जिसे कुछ दिया जाय या जिसके लिए कुछ किया जाय, उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं; जैसे –

भिखारी को भीख दो।

पिताजी बेटी के लिए कलम लाये।

लोग सुख शान्ति के निमित्त काम करते हैं।

५. अपादान कारक : जिस संज्ञा या सर्वनाम से क्रिया व्यापार के अलग होने का बोध होता है, उसे अपादान कारक कहते हैं; जैसे –

हिमालय से गंगा निकली है।

पेड़ से पत्ता गिरा।

६. सम्बन्ध कारक : जिस संज्ञा या सर्वनाम से उसका संबंध क्रिया से भिन्न किसी दूसरे शब्द (संज्ञा / सर्वनाम) के साथ सूचित होता है, उसे संबंध कारक कहते हैं; जैसे –

✯ गोपाल का भाई जा रहा है।

रीता की बहन पढ़ रही है।

मकान के कमरे खुले हैं।

https://withteachers.in/

★ मेरा नाम लीला है।
मेरी बहन शीला है।
मेरे सभी मामा आयेंगे।

★ वह अपना काम करता है।
मैं अपनी किताब पढ़ता हूँ।
सब अपने-अपने काम में लग गये।

७.अधिकरण कारक : जिस संज्ञा या सर्वनाम से क्रिया-व्यापार के आधार का बोध होता है, उसे अधिकरण कारक कहते हैं; जैसे –

ग्लास में पानी है।
मेज पर कागज है।
तुम शाम को आओ।

८. सम्बोधन कारक : जिस संज्ञा से किसी को पुकारने का बोध होता है, उसे सम्बोधन कारक कहते हैं; जैसे –

ऐ लड़के! इधर आ।
अरे मधु! मेरी बात सुन।
ए / ओ भाई! जरा सुनो तो।
हलो यार! मेरे पास आ जाओ।

https://withteachers.in/

अभ्यास

१. निम्नलिखित तालिका से सही वाक्य बनाइए –

लड़के शिशु बूढ़े पिताजी	ने	एक आम दूघ बोझ पत्र	खाया । पिया था । उठाया । लिखा ।
माँ तुम मैं प्रसाद जी		पपीते सारे केले कई लेख कई नाटक	खरीदे । खाये होंगे । पढ़े हैं । लिखे हैं ।
लड़कियों हम डॉक्टर नौकर		किताब एक जलेबी मरीज की रिपोर्ट चिट्ठी	बेची थी । खायी है । लिख दी । ली ।
बच्चों महिलाओं लड़कों उन्हों		जलेबियाँ कई फिल्में कहानियाँ पुस्तकें	खायीं । देखी थीं । पढ़ी होंगी । पढ़ लीं ।

२. निम्नलिखित तालिका से सही वाक्य बनाइए –

बच्चे बच्चों लड़की लड़कियों	ने	खाया । खाया । पढ़ा । पढ़ा ।
लड़का लड़के लड़की लड़कियाँ		गया । गये । गयी । गयीं ।

https://withteachers.in/

३. निम्नलिखित क्रियाओं में से अकर्मक और सकर्मक क्रियाओं को छाँटकर सामान्य भूतकाल में एक एक वाक्य बनाइए —

खाना, पढ़ना, दौड़ना, लिखना, कूदना, आना, देखना, पीना, सुनना, तैरना

उदाहरण - गोपाल ने चित्र बनाया।

गोपाल ने तस्वीर बनायी ।

गोपाल दौड़ा।

मालती दौड़ी।

४. नीचे दी गयी तालिका से सही वाक्य बनाइए —

(क)

कर्त्ता	कर्म	परसर्ग	क्रिया
पिताजी	बेटी		बुला रहे हैं।
मैंने	मोहन		देखा।
माँ	शिशु	को	सुलाती है।
सिपाही ने	चोर		पकड़ा।
उसने	जूतों		चमकाया।

(ख)

कर्त्ता	सम्प्रदान	परसर्ग	क्रिया
राजा ने	गरीबों		दान दिया ।
सेठ	भिखारी	को	वस्त्र देंगे।
बच्चे	गुरुजनों		प्रणाम करते हैं।

(ग)

कर्त्ता	अधिकरण	परसर्ग	क्रिया
वह	दोपहर		आएगा।
लड़की	सोमवार	को	जाएगी।
हम	चौदह नवम्बर		(बालदिवस) मनाते हैं।

https://withteachers.in/

५. नीचे दी गयी तालिका से सही वाक्य बनाइए —

(क)

तुम	चाकू		आम	काटो ।
वह	कलम		पत्र	लिखता है ।
चमेली	हैजे	से	कल	चल बसी ।
धीरेन	हाथ		खाना	पकाता है ।

(ख)

परीक्षा	सोमवार		शुरू होगी ।
लड़की	छत		गिर पड़ी ।
पिताजी	घर	से	निकल गये ।
मधु	विधु		तेज दौड़ता है ।
बहू	सास		लजाती है ।
तुम	छिपकली		डरते हो ।

६. नीचे दी गयी तालिका से सही वाक्य बनाइए —

(क)

	राम		मकान	
	गोपाल		लड़का	
यह	सुरेश	का	नौकर	है ।
	कमला		भाई	
	आप		पंखा	

(ख)

	उन		मोजे	
	घर		केले	
ये	मकान	के	दरवाजे	हैं ।
	दिनेश		भाई	
	आप		जूते	

https://withteachers.in/

(ग)

	आप		कुर्सी	
	मोहन		बहन	
वह	गोपाल	की	कॉपी	है ।
	ओड़िशा		नदी	

(घ)

	राम		कुर्सियाँ	
	गोपाल		बहनें	
वे	उस	की	कॉपियाँ	हैं ।
	देश		नदियाँ	

७. नीचे दी गयी तालिका से सही वाक्य बनाइए —

(क)

किताबें	आलमारी		हैं ।
कपड़े	बक्से		हैं ।
सरोज	घर	में	है ।
राजू	चिन्ता		है ।
कलम	जेब		है ।

(ख)

किताब	मेज		है ।
बन्दर	पेड़		बैठा है ।
हम	सत्य	पर	अड़िग हैं ।
तुम	जीवों		दया करो ।
वह	रेडियो		(समाचार) सुनता है ।

https://withteachers.in/

८. सही परसर्ग लगाकर वाक्यों के रिक्त स्थान भरिए –

(i) बगीचे ....बहुत फूल खिले हैं।

(ii) मुझ .... भरोसा रखो।

(iii) माँ ...... शिशु ... दूध पिलाया।

(iv) गोपाल .... तेजी .... काम करना पड़ेगा।

(v) रोगी .... चला नहीं जाता।

(vi) तुम .... उस ..... क्यों पीटा ?

(vii) वह ट्रेन ...... लोगों .... देख रहा है।

(viii) तालाब .... मछलियाँ तैरती हैं।

(ix) शहीदों .... सलामी दी गयी।

(x) मोहन ...... बहन नाचती है।

(xi) हरीश .... भाई नवीं कक्षा .... पढ़ता है।

(xii) आप .... कमरे बन्द हैं।

९. खाली जगहों पर **का** / **के** / **की** का प्रयोग कीजिए –

(i) रजनी .... चंद्रिका

(ii) परम पिता .... इच्छा

(iii) इस .... चमक

(iv) रक्त .... प्यास

(v) महिलाओं .... कमरे

(vi) प्राणों .... रक्षा

(vii) डोलियों .... ताँता

(viii) उन .... हृदय

(ix) दया .... पात्र

(x) गुरु .... उपदेश

https://withteachers.in/

संज्ञाओं की रूपावली

लिंग, वचन, कारक के आधार पर संज्ञा शब्दों के चार वर्ग बनते हैं— अकारांत पुंलिंग, आकारांत पुंलिग, अकारांत स्त्रीलिंग, इकारांत स्त्रीलिंग। नीचे संज्ञाओं की रूपावाली के कुछ उदाहरण दिये गये हैं—

अकारांत पुंलिंग 'बालक'

कारक	**एकवचन**	**बहुवचन**
कर्त्ता	बालक / बालक ने	बालक / बालकों ने
कर्म	बालक को	बालकों को
करण	बालक से/के द्वारा	बालकों से / के द्वारा
संप्रदान	बालक को/के लिए	बालकों को / के लिए
अपादान	बालक से	बालकों से
सम्बन्ध	बालक का/के/की	बालकों का / के / की
अधिकरण	बालक में / पर	बालकों में / पर
सम्बोधन	हे बालक !	हे बालको !

- इकारांत (मुनि, अतिथि), ईकारांत (भाई, आदमी), उकारांत (शिशु, गुरु), ऊकारांत (डाकू, भालू), ओकारांत (कोदों), औकारांत (जौ), आकारांत तत्सम शब्द (अभिनेता, कर्त्ता, दाता, पिता, राजा, विक्रेता), रिश्तेसूचक शब्द (काका, जीजा, दादा, नाना, मामा, बाबा, मुखिया) जैसे शब्द पुंलिंग शब्दों की रूपावली 'बालक' की तरह होती है।

(ध्यान देने की बात यह है कि दीर्घ ई / ऊ कारांत शब्द को बहुवचन बनाते समय दीर्घ स्वर ह्रस्व इ/उ में बदल जाते हैं। इ/ई कारांत का बहुवचनांत प्रत्यय 'ओं' की जगह 'यों' हो जाता है; जैसे — हाथी ने - हाथियों ने, भालू ने - भालुओं ने)

https://withteachers.in/

आकारांत पुंलिंग 'लड़का'

कारक	**एकवचन**	**बहुवचन**
कर्त्ता	लड़का / लड़के ने	लड़के/लड़कों ने
कर्म	लड़के को	लड़कों को
करण	लड़के से/लड़के के द्वारा	लड़कों से/लड़कों के द्वारा
संप्रदान	लड़के को/लड़के के लिए	लड़कों कों / लड़कों के लिए
अपादान	लड़के से	लड़कों से
सम्बन्ध	लड़के का / के / की	लड़कों का / के / की
अधिकरण	लड़के में/लड़के पर	लड़कों में / लड़कों पर
सम्बोधन	हे लड़के!	हे लड़को !

अकारांत स्त्रीलिंग 'बहन'

कारक	**एकवचन**	**बहुवचन**
कर्त्ता	बहन/ बहन ने	बहनें / बहनों ने
कर्म	बहन को	बहनों को
करण	बहन से / के द्वारा	बहनों से / के द्वारा
संप्रदान	बहन को / के लिए	बहनों को / के लिए
अपादान	बहन से	बहनों से
सम्बन्ध	बहन का / के / की	बहनों का / के / की
अधिकरण	बहन में / पर	बहनों में / पर
सम्बोधन	हे बहन !	हे बहनो !

आकारांत (बालिका, माता), उकारंत (धेनु, धातु), ऊकारांत (बहू), औकारांत (गौ) जैसे स्त्रीलिंग शब्दों की रूपावली 'बहन' की रूपावली की तरह होती है। दीर्घ ऊकारांत स्त्रीलिंग शब्दों को बहुवचन बनाते समय दीर्घ ऊकार ह्रस्व उ कार में बदल जाता है।

https://withteachers.in/

इकारांत स्त्रीलिंग 'जाति'

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	जाति / जाति ने	जातियाँ / जातियों ने
कर्म	जाति को	जातियों को
करण	जाति से / के द्वारा	जातियों से / के द्वारा
संप्रदान	जाति को / के लिए	जातियों को / के लिए
अपादान	जाति से	जातियों से
सम्बन्ध	जाति का / के / की	जातियों का / के / की
अधिकरण	जाति में / पर	जातियों में / पर
सम्बोधन	हे जाति!	हे जातियो!

ईकारांत (नदी, लड़की) तथा 'या' में अंत होने वाले (बुढ़िया, गुड़िया) स्त्रीलिंग शब्दों की रूपावली 'जाति' की रूपावली की तरह ही होती है। दीर्घ ईकारांत स्त्रीलिंग शब्दों को बहुवचन बनाते समय दीर्घ ईकार ह्रस्व 'इ' कार में बदल जाता है।

अभ्यास

१. निम्नलिखित शब्दो की रूपावली सभी कारकों और दोनों बचनों में लिखिए–
नौकर, पुस्तक, बालिका, घोड़ा, पति, भाई, नदी, शिशु, बहू, गौ

२. निम्नलिखित शब्द किस कारक और किस वचन में हैं, लिखिए –
माली से, बहनों की, डाकू के द्वारा, मामा को, दादाओं का, हे लड़को! हे बालक ! हे बालिकाओ! पुत्री पर, कवियों ने, मुखिया का।

https://withteachers.in/

सर्वनाम

सर्वनाम का अर्थ है - सभी संज्ञाओं के लिए प्रयुक्त होनेवाला नाम; जैसे –

मोहन जाता है। वह एक अच्छा लड़का है।

सर्वनाम वाक्य में कर्त्ता, कर्म और पूरक के स्थान पर आ सकते हैं; जैसे–

कर्त्ता - **वह** जाता है।

कर्म - **उसको** बुलाओ।

पूरक - वह **कौन** है ?

QBQ5HU

लिंग के कारण सर्वनाम में कोई परिवर्त्तन नहीं होता; जैसे –

वह जाता है। वह जाती है।

वचन के कारण सर्वनाम में परिवर्त्तन होता है; जैसे –

वह पढ़ता है। वे पढ़ते हैं।

परसर्ग के कारण सर्वनाम में परिवर्त्तन होता है; जैसे –

(वह) उसने खाया। (वे) उन्हें बुलाओ ।

(मैं) मुझसे कुछ न पूछो।

'आप' और 'कुछ' में परिवर्त्तन नहीं होता; जैसे –

आपका सामान तैयार है। कुछ खा लो।

सर्वनाम छह प्रकार के होते हैं –

१. पुरुषवाचक (मैं, तुम आदि)

२. निश्चयवाचक (यह, वह आदि)

३. अनिश्चयवाचक (कोई, कुछ आदि)

https://withteachers.in/

४. सम्बन्धवाचक (जो)

५. प्रश्नवाचक (कौन, क्या)

६. निजवाचक (आप)

इन पर नीचे विचार किया जा रहा है।

१. पुरुषवाचक सर्वनाम

किसी पुरुष या स्त्री के नाम के बदले आनेवाले शब्द को पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं । इनके तीन प्रकार हैं –

- उत्तम पुरुष : मैं, हम
- मध्यम पुरुष : तू तुम, आप
- अन्य पुरुष : वह, यह, वे, ये

२. निश्चयवाचक सर्वनाम

पास के अथवा दूर के व्यक्ति या वस्तु का निश्चित बोध करानेवाले शब्द को निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं –

पास : यह, ये

दूर : वह, वे

३. अनिश्चयवाचक सर्वनाम

किसी व्यक्ति, प्राणी या वस्तु का निश्चित बोध न करानेवाले शब्द को अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं –

प्राणी : कोई

अप्राणी (वस्तु) : कुछ

४. सम्बन्धवाचक सर्वनाम

किसी दूसरी संज्ञा या सर्वनाम से संबंध दिखाने के लिए आनेवाले शब्द को संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं –

जो (वह), जो (वे)

https://withteachers.in/

५. **प्रश्नवाचक सर्वनान**

प्रश्न पूछने के लिए प्रयुक्त शब्द को प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं –

- अज्ञात व्यक्ति / प्राणी : कौन, कौन-कौन

- अज्ञात वस्तु : क्या, क्या-क्या

६. **निजवाचक सर्वनाम**

जो शब्द कर्त्ता के विषय में कुछ बताता है उसे निजवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे -

आप / स्वयं/ खुद

अभ्यास

१. सर्वनाम किसे कहते हैं ? इसके भेदों के नाम लिखिए।

२. 'कोई' का में सभी कारकों में एकवचन रूप लिखिए।

३. निम्नलिखित सर्वनामों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए –

हमने, जिसको, अपनी, उससे, तू, तुम्हारा, किसी में, कोई, कौन, क्या

४. वाक्यों के खाली स्थानों को कोष्ठक के सर्वनामों के उचित रूपों से भरिए –

(i) आपने .... बुलाया (वह)

(ii) आज ....गाँव जाना है। (मैं)

(iii) ....मेज पर गिलास रखा ? (कौन)

(iv) .... को यह सन्तरा दे दो । (कोई)

(v) .... आपकी बात मान ली। (हम)

https://withteachers.in/

(vi) ...... ने हमारा सम्मान किया है। (आप)

(vii) अब तो मैं .... पर भरोसा नहीं कर सकता । (वे)

(viii) .... नाम क्या है ? (तू)

(ix) .... भाई बाजार गये हैं। (तुम)

(x) दूध में .... पड़ा है। (कुछ)

(xi) .... काम पूरा कर दिया। (वे)

(xii) .... को तुमने छू लिया। (क्या)

(xiii) .... पर सभी का विश्वास है। (आप)

५. 'क' स्तम्भ के मूल रूपों के साथ 'ख' स्तंभ के तिर्यक रूप जोड़िए –

'क'	**'ख'**
मैं	किसी
हम	उसे
तू	इन्हें
तुम	किन्होंने
वह	किस पर
वे	जिसकी
यह	तुझको
ये	उन्होंने
कौन	इसका
क्या	तुम्हें
कोई	हमारी
जो	मुझे

https://withteachers.in/

सर्वनामों की रूपावली

पुरुषवाचक उत्तम पुरुष मैं

कारक	**एकवचन**	**बहुवचन**
कर्त्ता	मैं, मैंने	हम, हमने
कर्म	मुझे, मुझको	हमें, हमको
करण	मुझसे, मेरे द्वारा	हमसे, हमारे द्वारा
सम्प्रदान	मुझे, मुझको, मेरे लिए	हमें हमको, हमारे लिए
अपादान	मुझसे	हमसे
सन्बन्ध	मेरा, मेरे, मेरी	हमारा, हमारे, हमारी
अधिकरण	मुझमें, मुझ पर	हममें, हम पर

पुरुषवाचक मध्यम पुरुष 'तू'

कारक	**एकवचन**	**बहुवचन**
कर्त्ता	तू, तूने	तुम, तुमने
कर्म	तुझे, तुझको	तुम्हें, तुमको
करण	तुझसे, तेरे द्वारा	तुमसे, तुम्हारे द्वारा
सम्प्रदान	तुझे, तुझको, तेरे लिए	तुम्हें, तुमको, तुम्हारे लिए
अपादान	तुझसे	तुमसे
सम्बन्ध	तेरा, तेरे, तेरी	तुम्हारा, तुम्हारे, तुम्हारी
अधिकरण	तुझमें, तुझ पर	तुममें, तुम पर

नोट : 'तुम' का प्रयोग एकवचन में भी होता है ।

अन्यपुरुषवाचक तथा निश्चयवाचक 'यह'

कारक	**एकवचन**	**बहुवचन**
कर्त्ता	यह, इसने	ये, इन्होंने
कर्म	इसे, इसको	इन्हें, इनको

https://withteachers.in/

करण	इससे, इसके द्वारा	इनसे, इनके द्वारा
सम्प्रदान	इसे, इसको, इसके लिए	इन्हें, इनको, इनके लिए
अपादान	इससे	इनसे
सम्बन्ध	इसका, इसके, इसकी	इनका, इनके, इनकी
अधिकरण	इसमें, इस पर	इनमें, इन पर

अन्यपुरुषवाचक तथा निश्चयवाचक 'वह'

कारक	**एकवचन**	**बहुवचन**
कर्त्ता	वह, उसने	वे, उन्होंने
कर्म	उसे, उसको	उन्हें, उनको
करण	उससे, उसके द्वारा	उनसे, उनके द्वारा
सम्प्रदान	उसे, उसको,उसके लिए	उन्हें, उनको, उनके लिए
अपादान	उससे	उनसे
सम्बन्ध	उसका, उसके, उसकी	उनका, उनके, उनकी
अधिकरण	उसमें, उस पर	उनमें, उन पर

प्रश्नवाचक 'कौन'

कारक	**एकवचन**	**बहुवचन**
कर्त्ता	कौन, किसने	कौन, किन्होंने
कर्म	किसे, किसको	किन्हें, किनको
करण	किससे, किसके द्वारा	किनसे, किनके द्वारा
सम्प्रदान	किसे,किसको, किसके लिए	किन्हें, किनको, किनके लिए
अपादान	किससे	किनसे
सम्बन्ध	किसका,किसके, किसकी	किनका, किनके, किनकी
अधिकरण	किसमें, किस पर	किनमें, किन पर

https://withteachers.in/

अनिश्चयवाचक 'कोई'

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	कोई, किसीने	कोई, किन्हीं ने
कर्म	किसीको	किन्हीं को
करण	किसी से, किसी के द्वारा	किन्हीं से, किन्हीं के द्वारा
सम्प्रदान	किसी को, किसी के लिए	किन्हीं को, किन्हीं के लिए
अपादान	किसी से	किन्हीं से
सम्बन्ध	किसी का,किसी के, किसी की	किन्हीं का, किन्हीं के, किन्हीं की
अधिकरण	किसी में, किसी पर	किन्हीं में, किन्हीं पर

सम्बधवाचक 'जो'

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	जो, जिसने,	जो, जिन्होंने
कर्म	जिसे, जिसको	जिन्हें, जिनको
कारण	जिससे, जिसके द्वारा	जिनसे, जिनके द्वारा
सम्प्रदान	जिसे, जिसको, जिसके लिए	जिन्हें,जिनको, जिनके लिए
अपादान	जिससे	जिनसे
सम्बन्ध	जिसका, जिसके, जिसकी	जिनका, जिनके, जिनकी
अधिकरण	जिसमें, जिस पर	जिनमें, जिन पर

https://withteachers.in/

विशेषण

QBZ1JH

गुण – मीठा आम, सुन्दर फूल
रंग – काला घोड़ा, तिरंगा झण्डा
अवस्था – मेहनती किसान, दयालु भगवान
परिमाण – एक किलो आटा, दो लिटर तेल
संख्या – चार बच्चे, पहली बात
कई आदमी, काफी किताबें

ऊपर के उदाहरणों में कुछ शब्द अन्य शब्दों के गुण, रंग, अवस्था, परिमाण, संख्या आदि विशेषताएँ बताते हैं। ऐसे शब्दों को 'विशेषण' कहते हैं। जिन शब्दों की विशेषता बताई जाती है, उनको विशेष्य या 'संज्ञा' कहते हैं। मीठा आम में मीठा विशेषण है और आम संज्ञा (विशेष्य)। इसी प्रकार अन्य विशेषताओं को पहचानिए।

विशेषण के मुख्य चार भेद होते हैं –

१. गुणवाचक विशेषण

२. संख्यावाचक विशेषण

३. परिमाणवाचक विशेषण

४. सार्वनामिक विशेषण

१. गुणवाचक विशेषण : शब्द–युग्म में पहले आने वाला शब्द, जब संज्ञा (विशेष्य) के गुण, स्वभाव, स्थान, आकार, रंग, अवस्था, काल आदि बताता है, उसे 'गुणवाचक विशेषण' कहते हैं;

जैसे – गुण – खट्टा अंगूर, चतुर लड़की

स्वभाव – ईमानदार लड़का, डरपोक आदमी

स्थान – सम्बलपुरी साड़ी, भारतीय किसान

बनारसी पान, ग्रामीण व्यक्ति

https://withteachers.in/

आकार - पतली छड़ी, सीधा रास्ता

रंग - सफेद बाल, हरी घास

अवस्था - सूखी डाली, बासी रोटी

काल - आगामी अधिवेशन, पुरानी बात

(२) संख्यावाचक विशेषण

शब्द-युग्म में पहले आने वाला शब्द, जब दूसरे शब्द की संख्या बताता है, उसे 'संख्यावाचक विशेषण' कहते हैं; ऐसे विशेषण दो प्रकार के होते हैं ।

(i) निश्चित संख्यावाचक और (ii) अनिश्चित संख्यावाचक

जैसे –

(i) निश्चित संख्यावाचक :

तीन दिन, पहला काम, तिगुनी फसल, प्रत्येक लड़का

(ii) अनिश्चित संख्यावाचक :

बहुत बच्चे, कई आदमी, कम कॉपियाँ, काफी किताबें

(३) परिमाणवाचक विशेषण

शब्द-युग्म में पहले आनेवाला शब्द जब दूसरे शब्द का परिमाण बताता है, उसे 'परिमाणवाचक विशेषण' कहते हैं । इसके भी दो प्रकार हैं ।

(i) निश्चित परिमाणवाचक और (ii) अनिश्चित परिमाणवाचक

जैसे –

निश्चित परिमाणवाचक	**अनिश्चित परिमाणवाचक**
दो मीटर कपड़ा	अधूरा काम
एक किलो आटा	थोड़ा चावल
तीन लिटर तेल	जरा-सी बात

https://withteachers.in/

४. सार्वनामिक विशेषण

शब्द–युग्म में पहले आने वाला सर्वनाम शब्द जब बाद में आनेवाले संज्ञा शब्द की विशेषता बताता है, उसे सार्वनामिक विशेषण' कहते हैं; जैसे –

यह किताब	ऐसी घटना	कौन–सी पुस्तक
मेरी कलम	अपनी घड़ी	कोई–सी लड़की
उसका मकान	आपके जूते	जो बच्चे

सार्वनामिक विशषेण तीन प्रकार से आते हैं –

(i) मूल रूप में बिना परसर्ग के – जैसे – यह, वह, वे, कौन, कोई, जो ।

(ii) तिर्यक रूप में परसर्ग के साथ – जैसे – मेरा, मेरे, मेरी, अपना, अपने, अपनी, उनका, उनके, उनकी ।

(iii) अपने व्युत्पन्न रूप में, जैसे – ऐसा, वैसा, जैसा, इतना, उतना, जितना ।

– सार्वनामिक विशेषण के रूप में कोई, कुछ, प्राणी और अप्राणी दोनों के लिए आते हैं ।

– निजवाचक सर्वनाम ना /ने/ नी युक्त होने पर सार्वनामिक विशेषण बन जाता है ।

https://withteachers.in/

अभ्यास

१. विशेषण किसे कहते हैं? इसके भेदों को सोदाहरण बताइए।

२. नीचे लिखे वाक्यों में से विशेषण शब्दों को छाँटिए –

(i) तुम्हारी पुरानी पुस्तक कहीं खो गयी।

(ii) ये आम बहुत मीठे हैं।

(iii) उस लड़के को बुलाओ।

(iv) बूढ़ा आदमी चलते-चलते बैठ गया।

(v) मैंने एक पतली छड़ी खरीदी।

(vi) थोड़ी-सी चाय पी लो।

३. निम्नलिखित विशेषणों में से गुणवाचक, संख्यावाचक, परिमाणवाचक विशेषणों को अलग-अलग कीजिए –

धनवान, मीठा, दोनों, गरीब, बूढ़ा, मेरा, पाँच, थोड़ा, बहुत, तीनों, पूर्वी, काफी, ज्यादा, कायर, ठण्डा, दो किलो, तीन मीटर, चार लिटर, दो दर्जन।

४. 'क' स्तम्भ के विशेषणों के साथ 'ख' स्तम्भ के विशेष्यों (संज्ञाओं) का मिलान कीजिए –

(क)	**(ख)**	**(क)**	**(ख)**
घातक	संकल्प	धार्मिक	दीवार
दृढ़	हत्या	दिमागी	आदमी
निर्मम	जवाब	टूटी	पत्तल
अथाह	चोट	जूठी	काम
मुँहतोड़	जल	देहाती	व्यक्ति

५. नीचे कुछ विशेषण दिये गये हैं। उनके सामने उनका सही संज्ञा शब्द लिखिए—

विशेषण – संज्ञा	**विशेषण – संज्ञा**	**विशेषण – संज्ञा**
पापी – पाप	प्रतिष्ठित –	ज्ञानी –
निष्ठुर –	पूज्य –	अच्छा –
घृणित –	बुरा –	अधिकारी –

https://withteachers.in/

क्रिया

जिस पद से किसी कार्य का करने या होने का बोध होता है, उसे क्रियापद कहते हैं; जैसे – पढ़ना, लिखना आदि ।

क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं; जैसे– पढ, लिख । इनके साथ 'ना' जोड़ने से **क्रिया बनती है** । धातु के दो प्रकार हैं ।

१. मूल धातु – जा, पढ़, आदि ।

२. यौगिक धातु – मूलधातु के साथ दूसरे शब्द (प्रत्यय) आदि जोड़ने से यौगिक धातु बनती है । जैसे – 'खा' के साथ प्रेरणार्थक प्रत्यय 'ला' जोड़ने से 'खिलाना' क्रिया बनती है । दो या दो से अधिक धातुओं को जोड़ने से संयुक्त धातु बनती है ।

क्रिया के भेद

क्रिया के अनेक भेद होते हैं । उनमें से कुछ प्रमुख भेदों पर यहाँ विचार किया जा रहा है—

QC8HL5

१. रचना के आधार पर

(i) मूल क्रिया : जैसे— पढ़ना, लिखना आदि

(ii) यौगिक क्रिया : जैसे — पढ़ सकना, लिख देना आदि ।

२. कर्म के आधार पर

कर्म के आधार पर क्रिया के तीन भेद हो सकते हैं (i) सकर्मक (ii) द्विकर्मक (iii) अकर्मक ।

(i) सकर्मक क्रिया : 'राम फल खाता है' । इस वाक्य में 'खाना' क्रिया सकर्मक है, क्योंकि 'फल' कर्म है । इस प्रकार खाना, लिखना, पढ़ना, पीना, काटना आदि

https://withteachers.in/

क्रियाएँ सकर्मक होती हैं। वाक्य में कर्म न आने पर भी कर्म की संभावना बनी रहती है। इसलिए ये क्रियाएँ सर्वदा सकर्मक हैं।

(ii) **द्विकर्मक क्रिया :** मोहन सोहन को पुस्तक देता है ।

इस वाक्य में क्रिया 'देना' है। इसके दो कर्म हैं । सोहन और पुस्तक। इसलिए यह द्विकर्मक क्रिया है। कहना, पूछना, पढ़ाना, आदि द्विकर्मक क्रियाएँ हैं।

(iii) **अकर्मक क्रिया :** 'घोड़ा दौड़ता है।' इस वाक्य में दौड़ना क्रिया किसी कर्म की अपेक्षा नहीं रखती। प्रश्न करें - क्या दौड़ा? किसको दौड़ा? उत्तर में कुछ नहीं आता। अतएव दौड़ना अकर्मक क्रिया है। इसी प्रकार जाना, आना, कूदना, उड़ना, तैरना आदि अकर्मक क्रियाएँ हैं।

३. समाप्ति के आधार पर

कार्य के समाप्त होने या न होने के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं।

(i) समापिका क्रिया - घोड़ा दौड़ता था।
राम घर जाएगा।

ऊपर के वाक्यों के अंत में आने वाली क्रियाएँ कार्यों तथा वाक्यों की समाप्ति का बोध कराती हैं, अतएव इनको समापिका क्रिया कहते हैं।

(ii) असमापिका क्रिया : रमेश रोज खाकर दफ्तर जाता है।
गाड़ी अब आनेवाली है।

ऊपर के वाक्यों में 'खाकर' 'आनेवाली' ऐसी क्रियाएँ हैं जिनकी समाप्ति या पूर्णता नहीं हो पायी है। अतएव ऐसी क्रियाएँ असमापिका क्रियाएँ हैं। इन्हें 'कृदन्त' भी कहते हैं।

४. कार्य व्यापार की प्रधानता के आधार पर

कार्य-व्यापार की प्रधानता के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं —

(i) **मुख्य क्रिया** (ii) **सहायक क्रिया**

https://withteachers.in/

(i) **मुख्य क्रिया** : जिस क्रिया से एक मात्र मुख्य कार्य व्यापार का बोध होता है, उसे मुख्य क्रिया कहते हैं; जैसे –

'वह स्कूल गया'। इस वाक्य में 'जाना' मुख्य क्रिया है।

(ii) **सहायक क्रिया :**

जिस क्रिया के द्वारा मुख्य क्रिया में अर्थभेद उत्पन्न करने में सहायता मिलती है, उसे सहायक क्रिया कहते हैं; जैसे –

कमला का पत्र पढ़ा गया।

इस वाक्य में 'गया' मुख्य क्रिया 'पढ़ना' में अर्थ भेद उत्पन्न करने में सहायता कर रही है।

हिन्दी में सहायक क्रियाएँ अनेक प्रकार की होती हैं। क्योंकि ये मुख्य क्रिया की कई तरह से सहायता करके अर्थभेद उत्पन्न कर सकती हैं; जैसे –

(i) कालसूचक सहायक क्रिया – बच्चा रो रहा है। (क्रिया चल रही है)

(ii) वाच्य सूचक सहायक क्रिया – चिट्ठी भेजी गयी। (वाच्य की सूचना)

(iii) वृत्ति सूचक सहायक क्रिया – शायद उसने पढ़ा होगा।

(संभावना वृत्ति की सूचना)

(iv) संम्मिश्र क्रिया सूचक सहायक क्रिया – उसे साड़ी पसंद आयी।

('पसंद' के साथ 'आना' का मिश्रण)

(v) पक्ष सूचक सहायक क्रिया – हम इतिहास पढ़ रहे हैं (अपूर्णता बोधक)

(vi) रंजक सहायक क्रिया – बच्ची काँप उठी।

(मुख्य क्रिया 'काँपना' को विशिष्टता प्रदान करती है 'उठी' क्रिया। यह रंजकता या विशेषता द्योतन करती है।)

https://withteachers.in/

५. संयुक्त क्रियाएँ

जब एक से अधिक क्रियाओं का प्रयोग हो और क्रिया व्यापार की नई विशेषता का बोध हो तो उन क्रियाओं को संयुक्त क्रिया कहते हैं; जैसे – रो उठना, चल पड़ना, लिख डालना आदि। इनमें एक मुख्य क्रिया है, जो धातु रूप में है; जैसे– रो, चल, आदि। दूसरी क्रिया मुख्य कार्यव्यापार में कोई खास वैशिष्ट्य लाने में सहायता करती है; जैसे– उठना या पड़ना आदि। इनको सहायक क्रिया कहते हैं।

६. प्रेरणार्थक क्रियाएँ

कर्त्ता की प्रेरणा से होनेवाले कार्य की क्रिया को 'प्रेरणार्थक क्रिया' कहा जाता है। अकर्मक और सकर्मक दोनों प्रकार की क्रियाओं से प्रेरणार्थक क्रियाएँ बनती हैं। जो कर्त्ता कार्य करने की प्रेरणा देता है, वह 'प्रेरक कर्त्ता' कहलाता है और जो कार्य करने के लिए प्रेरित होता है उसे 'प्रेरित कर्त्ता' कहते हैं। इसमें प्रेरित कर्त्ता स्वयं कर्त्ता होने पर भी व्याकरणिक दृष्टि से 'को' या 'से' परसर्गयुक्त होने से क्रमशः 'कर्म' या 'करण' बन जाता है;

जैसे – माँ ने बच्चे को दूध पिलाया।

माँ ने आया से बच्चे को दूध पिलवाया

(उक्त दोनों वाक्यों में माँ 'प्रेरक कर्त्ता' है। पहले वाक्य में 'बच्चे को' प्रेरित कर्त्ता है जो कर्म के स्थान पर आया है। दूसरे वाक्य में 'आया से' 'करण' के स्थान पर आया है।)

प्रेरणार्थक क्रियाएँ दो प्रकार की होती हैं – **प्रथम प्रेरणार्थक और द्वितीय प्रेरणार्थक**।

(i) **प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया :** कार्य व्यापार में कर्त्ता प्रत्यक्ष भाग लेता है। (प्रथम वाक्य)

https://withteachers.in/

(ii) **द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया :** कार्यव्यापार में कर्त्ता प्रत्यक्ष रूप से भाग नहीं लेता। पर उसकी प्रेरणा से कोई दूसरा कार्यव्यापार का संपादन करता है। (द्वितीय वाक्य)

प्रेरणार्थक क्रियाओं के रूप-परिवर्त्तन के नियम

१. मूल धातु में 'आना' जोड़कर प्रथम प्रेरणार्थक और 'वाना' जोड़कर द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया रूप बनाया जाता है; जैसे —

मूल धातु	**प्रथम प्रेरणार्थक**	**द्वितीय प्रेरणार्थक**
उग	उगाना	उगवाना
खिल	खिलाना	खिलवाना
दौड़	दौड़ाना	दौड़वाना
पढ़	पढ़ाना	पढ़वाना
लिख	लिखाना	लिखवाना
सुन	सुनाना	सुनवाना
हँस	हँसाना	हँसवाना

२. कुछ मूलधातु में पहेल मात्रा परिवर्त्तन कर दिया जाता है (आ का अ) (ई / ए का इ) (ऊ/ ओ का उ)। फिर आना जोड़कर प्रथम प्रेरणार्थक और 'वाना' जोड़कर द्वितीय प्रेरणार्थक क्रियारूप बनाया जाता है; जैसे —

मूलधातु	**प्रथम प्रेरणार्थक**	**द्वितीय प्रेरणार्थक**
काट	कटाना	कटवाना
खेल	खिलाना	खिलवाना
घूम	घुमाना	घुमवाना
छोड़	छुड़ाना	छुड़वाना
जाग	जगाना	जगवाना

https://withteachers.in/

डूब	डुबाना / डुबोना	डुबवाना
नाच	नचाना	नचवाना
बोल	बुलाना	बुलवाना

३. स्वरांत धातु में पहले मात्रा परिवर्त्तन करके (आ/ई/ए का इ) (ऊ/ओ का उ), फिर 'लाना' जोड़कर प्रथम प्रेरणार्थक तथा 'लवाना' जोड़कर द्वितीय प्रेरणार्थक क्रियारूप बनाया जाता है; जैसे –

मूलधातु	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
खा	खिलाना	खिलवाना
छू	छुलाना	छुलवाना
जी	जिलाना	जिलवाना
दे	दिलाना	दिलवाना
पी	पिलाना	पिलवाना
रो	रुलाना	रुलवाना
सो	सुलाना	सुलवाना

४. कुछ धातुओं के दो-दो रूप बनते हैं; जैसे –

मूलधातु	**प्रथम प्रेरणार्थक**	**द्वितीय प्रेरणार्थक**
कह	कहाना, कहलाना	कहवाना / कहलवाना
देख	दिखाना/दिखलाना	दिखवाना/दिखलवाना
बैठ	बिठाना/बिठलाना	बिठवाना/बिठलवाना
सीख	सिखाना/सिखलाना	सिखवाना/सिखलवाना

(5) कुझ क्रियाओं के 'प्रथम प्रेरणार्थक' रूप नहीं बनते, जैसे – खेना, खोना, गाना, ढोना, पीटना, भेजना, लेना ।

(6) कुछ क्रियाओं के कोई भी प्रेरणार्थक रूप नहीं बनते, जैसे – आना, गँवाना, चाहना, जँचना, जानना, जाना, पाना, मिलना, सोचना, होना ।

https://withteachers.in/

काल

कार्य के समय, कार्य की पूर्णता, या अपूर्णता का बोध करने के लिए क्रिया में होनेवाले परिवर्त्तन को 'काल' कहते हैं । ये तीन प्रकार के हैं – भूतकाल, वर्त्तमानकाल, भविष्यत् काल ।

१. भूतकाल

जिससे कार्य के बीते हुए समय में होने का बोध होता है, उसे भूतकाल कहते हैं । इसके छह भेद होते हैं; –

सामान्य, आसन्न, पूर्ण, अपूर्ण, संदिग्ध, हेतुहेतुमद्

(i) सामान्य भूतकाल : इससे बीते हुए समय का तो बोध होता है, पर विशेष समय का बोध नहीं होता; जैसे –

मैंने लिखा ।	मैं गया ।	तू गयी ।
हमने लिखा ।	हम गये ।	वे गयीं ।

(ii) आसन्न भूतकाल : इससे पता चलता है कि कार्य भूतकाल में आरंभ हुआ था, कुछ समय पहले समाप्त हो गया है; जैसे –

उसने रोटी खायी है ।	आप गये हैं ।
गोपाल ने केले खाये हैं ।	हम दौड़ी हैं ।

(iii) पूर्ण भूतकाल : इससे पता चलता है कि कार्य बहुत पहले समाप्त हो चुका है; जैसे –

मैंने केला खाया था ।	उसने कहा था ।
राजू आया था ।	वे तैरे थे ।

https://withteachers.in/

(iv) अपूर्ण भूतकाल : इससे पता चलता है कि कार्य भूतकाल में हो रहा था, पर उसके समाप्त होने का पता नहीं चलता; जैसे –

हम पढ़ रहे थे। मैं जा रही थी।

हम पढ़ते थे। मैं जाती थी।

(v) संदिग्ध भूतकाल : इसमें कार्य के भूतकाल में होने में सन्देह प्रकट किया जाता है। अतः यह स्पष्ट नहीं होता कि कार्य पूरा हुआ या नहीं; जैसे –

चोर अब तक भाग गया होगा। उसने लडडू खाया होगा।

वे अब तक पहुँच गये होंगे। उसने दो लड्डू खाये होंगे।

(vi) हेतुहेतुमद् भूतकाल

इससे पता चलता है कि भूतकाल में कार्य होनेवाला था, पर किसी कारण नहीं हो पाया, क्योंकि शर्त पूरी न हो सकी; जैसे –

राम आता तो गीत गाता। वर्षा होती तो स्कूल बन्द होता।

हम जाते तो वह आती। उसने पत्र लिखा होता तो मैंने उसे बुलाया होता।

२. वर्त्तमान काल :

जिससे कार्य के वर्त्तमान समय में होने का बोध होता है, उसे वर्त्तमान काल कहते हैं। इसके चार भेद होते हैं :– सामान्य, तात्कालिक, संदिग्ध, संभाव्य।

(i) सामान्य वर्त्तमान काल : इससे कार्य के वर्त्तमान समय में होने का पता तो चलता है, पर निश्चित समय का बोध नहीं हो पाता; जैसे –

हम रोटी खाते हैं। मुझे हिन्दी आती है।

मछली पानी में रहती है। लड़के मैदान में खेलते हैं।

(ii) तात्कालिक वर्त्तमानकाल : इससे पता चलता है कि कार्य वर्त्तमानकाल में हो रहा है, पर पूरा नहीं हुआ है; जैसे –

पिताजी चिट्ठी लिख रहे हैं।

https://withteachers.in/

बच्चा चाँद देख रहा है।

चिड़िया आसमान में उड़ रही है।

(iii) **संदिग्ध वर्त्तमानकाल :** इससे वर्त्तमानकाल में कार्य के होने में सन्देह प्रकट होता है; जैसे –

लड़के पढ़ते होंगे। लड़की पढ़ रही होगी।

मदन आता ही होगा। वह जा रहा होगा।

(iv) **संभाव्य वर्त्तमानकाल :** इससे वर्त्तमानकाल में कार्य होने की संभावना का पता चलता है; जैसे –

संभवतः वह खाता हो।

संभवत वह पढ़ता हो।

३. भविष्यत् काल

इस काल की क्रिया से आनेवाले या भविष्य के समय का बोध होता है। इसके तीन भेद होते हैं ; जैसे – सामान्य, संभाव्य, हेतुहेतुमद्।

(i) **सामान्य भविष्यत्काल :** इससे बोध होता है कि आनेवाले समय में कार्य सामान्यतः सम्पन्न होगा; जैसे –

मैं गीत गाऊँगी। वह भुवनेश्वर जाएगा।

(ii) **संभाव्य भविष्यत् काल :** इससे बोध होता है कि भविष्य में कार्य होने की संभावना है; जैसे –

संभवतः उमेश कल आए।

हो सकता है, दो दिनों में बारिश हो।

(iii) **हेतुहेतुमद् भविष्यत् काल :** इससें बोध होता है कि भविष्य में इस कार्य का होना, किसी दूसरे कार्य के होने पर निर्भर करता है; जैसे –

वह आए तो मैं जाऊँ।

वे हमारी बात मानें ते हम सभा में जाएँ।

https://withteachers.in/

अभ्यास

१. 'क्रिया' किसे कहते हैं?

२. क्रिया के मूलरूप को क्या कहते हैं? उससे क्रिया कैसे बनायी जाती है?

३. 'यौगिक धातु' किसे कहते हैं? उसके भेदों के नाम लिखिए।

४. निम्नलिखित क्रियाओं के प्रथम और द्वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए –

दौड़ना, लिखना, सुनना, चलना, पढ़ना, रोना

५. निम्नलिखित धातुओं के प्रथम और द्वितीय प्रेरणार्थक रूप बनाइए –

काट, खेल, घूम, जाग, लेट, डूब, नाच

६. अकर्मक और सकर्मक क्रिया में क्या अन्तर है? उदाहरण देकर समझाइए।

७. 'क' स्तंभ में कुछ वाक्य और 'ख' स्तंभ में कालों के नाम दिये गये हैं। वाक्यों के साथ कालों का मिलान करके लिखिए –

'क' स्तंभ	**'ख' स्तंभ**
मैंने खाना खा लिया है।	संभाव्य भविष्यत्
तुम कहानी लिखोगी।	सामान्य भूत
वह नवीं कक्षा में पढ़ता होगा।	सामान्य भविष्यत्
नानी पुराण पढ़ रही थी।	हेतुहेतुमद् भूत
मैं पढ़ रहा होऊँ।	हेतुहेतुमद् भविष्यत्
संभवतः वे पढ़ें।	सामान्य वर्त्तमान
आप कहें तो मैं जाऊँ।	संदिग्ध वर्त्तमान
धूप होती तो कपड़े सूख जाते।	आसन्न भूत
वह पाठ पढ़ चुका है।	संभाव्य वर्त्तमान
उसने कहा था।	आसन्न भूत
रमेश ने आम खाये हैं।	पूर्ण भूत

https://withteachers.in/

८. निम्नलिखित वाक्यों को क्रियाओं की विभिन्न कालों में बदलकर लिखिए –

वर्त्तमान	भूत	भविष्य
हम रोज स्कूल जाते हैं।	हम रोज स्कूल जाते थे।	हम रोज स्कूल जायेंगे।
--------------	वह गया।	--------------
--------------	उसने खाना खाया है।	--------------
रानी पुस्तक पढ़ रही है।	--------------	--------------
मंजु रोटी खाती है।	--------------	--------------
--------------	उसने कहा था।	--------------
--------------	सब लोग पढ़ रहे थे।	--------------
शायद वह आता होगा।	--------------	--------------
--------------	--------------	वह दिल्ली जाएगा।
--------------	रेलगाड़ी चल रही थी।	--------------
लड़के मैदान में खेलते हैं।	--------------	--------------
लड़कियाँ गीत गाती हैं।	--------------	--------------
--------------	वर्षा होती थी।	--------------
--------------	कौआ उड़ रहा था।	--------------
--------------	--------------	हम पत्र लिखेंगे।
ताला खोला जाता है।	--------------	--------------
--------------	--------------	संभवतः वह कल जाए।
रोजी से चला नहीं जाता।	--------------	--------------
घोड़े दौड़ते हैं।	--------------	--------------
पत्र भेज देना है।	--------------	--------------

https://withteachers.in/

९. निम्नलिखित क्रियाओं के प्रथम और द्वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए:-

मुख्यक्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
हँसना	....	....
खेलना	....	....
खाना	....	....
पढ़ना	....	....
लिखना	....	....
देखना	....	....
सोना	....	....
सीखना	....	....
रोना	....	....
चलना	....	....
सुनना	....	....
उगना	....	....
काटना	....	....
नाचना	....	....
बोलना	....	....
दौड़ना	....	....
देना	....	....
पीना	....	....
कहना	....	....
जागना	....	....

https://withteachers.in/

१०. निम्नलिखित क्रिया पदों के सामने सकर्मक या अकर्मक लिखिए। इनको लगाकर एक-एक वाक्य भी बनाइए।

खाना	-------------	--------------------------
जाना	-------------	--------------------------
हँसना	-------------	--------------------------
लिखना	-------------	--------------------------
पढ़ना	-------------	--------------------------
रोना	-------------	--------------------------
आना	-------------	--------------------------
लाना	-------------	--------------------------
कहना	-------------	--------------------------
तैरना	-------------	--------------------------
दौड़ना	-------------	--------------------------
देना	-------------	--------------------------
पीना	-------------	--------------------------
सीखना	-------------	--------------------------
काटना	-------------	--------------------------
फटना	-------------	--------------------------
पिलाना	-------------	--------------------------
उड़ना	-------------	--------------------------
नाचना	-------------	--------------------------
गाना	-------------	--------------------------

https://withteachers.in/

गिरना	-------------	--------------------------
भेजना	-------------	--------------------------
काँपना	-------------	--------------------------
कूदना	-------------	--------------------------
दुहना	-------------	--------------------------
खिलाना	-------------	--------------------------

११. निम्नलिखित क्रियाओं के पाँच-पाँच उदाहरण दीजिए ।

(१) मुख्य क्रिया : ....

....

....

(२) सहायक क्रिया : ....

....

....

(३) संयुक्त क्रिया : ....

....

....

(४) द्विकर्मक क्रिया : ....

....

....

https://withteachers.in/

अव्यय

वाक्य में प्रयुक्त होते समय जो शब्द मूल रूप में ही आते हैं और उनका कोई रूप-परिवर्त्तन नहीं होता, उन्हें अव्यय कहते हैं। इसलिए अव्यय को अविकारी शब्द कहते हैं; जैसे – और, के पहले, वहाँ , शाबाश, हाँ, छि: आदि ।

अव्यय चार प्रकार के हैं; जैसे –

(i) **क्रिया विशेषण :** ये क्रिया की विशषता बताते हैं; जैसे – धीरे-धीरे, अचानक, इसलिए, शायद, क्योंकि, आजकल, तुरंत, यहाँ, वहाँ, इस तरफ, आगे, पीछे, लगातार, बारबार, बहुत, काफी, क्रम-क्रम से, चुपचाप, बाहर, जरा-सा, ध्यान-से, बिना हिले-डुले आदि।

(ii) **संबंधबोधक :** ये वाक्य में एक पद (संज्ञा या सर्वनाम) से दूसरे पद का संबंध बताते हैं; जैसे – के बाद, के पश्चात्, के आगे, के पीछे, की तरफ, के निमित्त, के नीचे, के द्वारा, के अधीन, के सिवा, के बिना, की तरह, के साथ, की अपेक्षा, के आसपास, की ओर आदि।

(iii) **समुच्चयबोधक :** ये दो शब्दों या वाक्यों को जोड़ते हैं; जैसे – और, तथा, एवं, या, अथवा, क्या-क्या, न-न, चाहे-या, परन्तु, अपितु, किन्तु, ही नहीं - बल्कि- भी, बल्कि, मगर, फिर भी, इसलिए अतएव, क्योंकि, ताकि, जिससे कि, यद्यपि - तथापि, मानो, हालाँकि, लेकिन, मगर, तो, कि आदि ।

(iv) **विस्मयादिबोधक :** ये वक्ता के विस्मय, आनन्द, आदि भावों को व्यक्त करते हैं; जैसे – वाह! शाबाश, हे राम, बाप रे!, उफ्, अरे, हाँ, धिक, छिः-छिः, अरी, राम-राम, धन्यवाद, शुक्रिया, हाय, अजी, आहा, धन्य-धन्य आदि।

https://withteachers.in/

अभ्यास – २ (१)

१. अव्यय का अर्थ क्या है?

२. अव्यय कितने प्रकार के हैं ? वे कौन-कौन से हैं?

३. क्रियाविशेषण किसे कहते हैं ?

४. नीचे के वाक्यों में से क्रियाविशेषण छाँटिए—

(i) मुझे थोड़ी-सी चाय दीजिए।

(ii) दीवार बारिश के कारण एकाएक ढह गयी।

(iii) बेचारा काम की तलाश में दिन भर घूमता रहा।

(iv) असल में वह झूठ नहीं बोली थी।

५. सम्बन्धसूचक अव्यय किसे कहते हैं? सोदाहरण बताइए।

६. समुच्चयबोधक अव्यय किसे कहते हैं ? सोदाहरण बताइए।

७. नीचे दिये गये वाक्यों से समुच्चयबोधक अव्यय छाँटिए

(i) लड़के और लड़कियाँ मैदान में खेल रहे हैं।

(ii) कुछ लोग कमरे के बाहर और कुछ लोग कमरे के भीतर बैठे थे।

(iii) वह तेज दौड़ता है, पर ज्यादा समय तक नहीं दौड़ सकता।

(iv) यदि तू ठीक से पढ़ा होता, तो आज तुझे रोना न पड़ता।

(v) तुम यहाँ से जाओगे कि मैं जाऊँगा?

८. विस्मयादिबोधक अव्ययों का प्रयोग करके पाँच वाक्य बनाइए।

९. निम्नलिखित वाक्यों के रेखांकित अव्ययों के नाम बताइए —

(i) वह चुपचाप आया।

(ii) वे लौटकर बाहर चले गये।

https://withteachers.in/

(iii) मैं <u>जरा-सा</u> हिलता था ।

(iv) <u>हाय</u> ! ये मर न जाएँ ।

(v) हम कीडों को <u>ध्यान से</u> देखते थे ।

(vi) वह बाहर चली आयी <u>और</u> बोली ।

(vii) <u>परन्तु</u> तुम तो क्रूर हो ।

(viii) वे किस छप्पर <u>के नीचे</u> बैठे थे ?

(ix) उस <u>के पीछे</u> सेवक खड़ा था ।

(x) मैं <u>बिना हिले-डुले</u> बैठा रहा ।

१०. सही कथन के आगे ✓ चिह्न लगाइए :

उन पद या पदों को <u>अव्यय</u> कहा जाता है —

(१) जिनका रूप वाक्य में प्रयुक्त होते ही बदल जाता है । ☐

(२) जिनका रूप आंशिक बदलता है । ☐

(३) जिनके रूप में कोई परिवर्तन नहीं होता । ☐

(४) जिनके रूप में कभी-कभी परिवर्तन हो जाता है । ☐

११. इन में से जो अव्यय पद हैं, उनको रेखांकित कीजिए —

तुरंत, श्यामनंदन, कि, धीरे-धीरे, अच्छा, धन्यवाद, के नीचे, और, पढ़ाई, लेकिन, पहाड़, शाबाश, लगातार, ताकि, चूँकि, हालाँकि, उफ्, की तरह, के सिवा, बहुत, बड़ा, काफी, छोटा, मंद-मंद, के बाद, आगे, अगुवा, अचानक, धीरता, अवश्य, आदमी, मानवता, वहाँ, आजकल, चोर, वे, किन्तु, अतएव ।

https://withteachers.in/

१२. नीचे के वाक्यों में से क्रिया-विशेषणों को छाँटिए —

(i) जरा मेरी तरफ ध्यान दीजिए ।

(ii) आज हवा धीरे-धीरे बह रही है ।

(iii) बारिश से यह दीवार एकाएक ढह गयी ।

(iv) जेट विमान बहुत तेज उड़ता है ।

(v) लोगों ने चोर पर दनादन मुक्के बरसाये ।

(vi) फेरीवाला दिन भर घूमता रहता है ।

(vii) मतवाला हाथी हौले-हौले चलता है ।

१३. कुछ प्रचलित अव्यय नीचे दिये गये हैं । अपनी- पाठ्य-पुस्तक से इनके प्रयोग ढूँढ़िए और कॉपी में लिखिए —

यदि, अब, तभी, तो, तेज, ज्यादा, ज़रा, तक, बल्कि, मानो, ज्यों-त्यों, चाहे, नहीं तो, या, अथवा, एवं, वरना, ही, भी, भर, न, नहीं, जैसे, हाँ, मत, सिर्फ, के अनुसार, अभी, कब, आज, कल, यहाँ, वहाँ, जहाँ, तहाँ, ऐसे, वैसे, बहुत, कम, थोड़ा, कितना, जितना, कृपया, सर्वथा, अनायास, यत्र-तत्र ।

१४. सही क्रिया विशेषण लगाकर वाक्यों को पूरा कीजिए —

(i) बाबूजी दफ्तर के लिए ------ निकले ।

(जल्द, साथ, क्योंकि)

(ii) अरबी घोड़े ------- दौड़ते हैं ।

(तेज़, भीतर, कुछ)

(iii) वे ------- हों, आज आ जायेंगे ।

(विदेशों, जहाँ भी, जब तक)

(iv) लीला को ------ हँसी आ गई ।

(लगातार, अचानक, यदाकदा)

https://withteachers.in/

(v) उसने ----- कहा ।

(रोते-रोते, हँसते-गाते, चलते-फिरते)

(vi) ऐसा ------- चलेगा ?

(कब तक, जब तक, पर्यन्त)

(vii) मनु पहाड़ पर ------- चढ़ता गया ।

(इधर, धीरे-धीरे, चारों ओर)

(viii) बेवकूफ लोग ----- हँसते हैं ।

(ध्यानपूर्वक, यों ही, शर्म से)

१५. अव्यय के चार प्रकार हैं । निम्न विकल्पों में से उन्हें छाँटकर लिखिए —

क्रिया विशेषण, विधेय विशेषण, समुच्चयबोधक, सम्मानबोधक, आदरार्थक, विस्मयादिबोधक, हेतुहेतुमद्‌भूत, संबंधबोधक

१६. निम्नलिखित समुच्चयबोधक अव्यय लगाकर अलग अलग वाक्य बनाइए —

और, अथवा, परन्तु, अपितु, इसलिए, ताकि

१७. विस्मयादिवोधक अव्ययों से क्या व्यक्त-होता है ? चार उदाहरण दीजिए ।

१८. सही अव्यय पद लगाकर वाक्यों को पूर्ण किजिए —

(i) तुम रोज पढ़ाई करो ---- परीक्षा में पास हो जाओ ।

(ताकि, अथवा, अपितु)

(ii) वह अच्छा खेलता है ------ सभी से झगड़ता है ।

(एवं, लेकिन, पुनश्च)

(iii) राम, लक्ष्मण ------ सीता वन में गये । (या, और, किंतु)

(iv) दशरथ ने ------- प्राण त्यागे ।

(तड़प-तड़प कर, हँस-हँस कर, मर मर कर)

https://withteachers.in/

(v) हनुमान ----- पहाड़ी पर चढ़ गये ।

(धम से, मानो, इधर-उधर)

(vi) धृतराष्ट्र ठीक से चल नहीं पाते थे ------ वे अंधे थे ।

(ताकि, क्योंकि, हालाँकि)

(vii) आज बारिश होगी ------- पौधे लगाना ।

(और, चूँकि, तो, कि)

(viii) वह ऐसी बातें करता है ------- वह सबका मालिक हो ।

(मानो, ऊपर, अर्थात)

१९. इन वाक्यों में सही अव्यय का प्रयोग कीजिए ।

(i) हिरन दौड़ता है । (तेज, सहसा, धीरे-धीरे)

(ii) शेर शिकार पर झपटता है । (धीरे से, अचानक, क्योंकि)

(iii) हवाई जहाज आसमान में उड़ता है । (फर्राटे से, धीरे से, कदाचित्)

(iv) पेड़ लगाएँ, जीवन बचाएँ। (तब, और, फिर से)

(v) उनको दिलका दौरा पड़ा, अस्पताल गए हैं । (जब, इसलिए, अवश्य)

(vi) यह गाड़ी चार घंटे आयी । (देर से, अधिक, सामने)

https://withteachers.in/

अपठित अनुच्छेद का पठन और अवधारण

तृतीय भाषा का विद्यार्थी किसी अपठित अनुच्छेद को पढ़कर समझ सकता है, क्योंकि वह हिन्दी भाषा से परिचित है और अपनी बुद्धि से विचार के सिलसिले को समझ सकता है । अत: किसी अपठित अनुच्छेद को पढ़कर वह उसमें से प्रश्नों के उत्तर दे सकता है ।

QCRNPF

इस कार्य के लिए उसे निम्नलिखित विषयों पर ध्यान देना होगा –

(१) अपठित अनुच्छेद को एकाधिक बार पढ़ लेना चाहिए ।

(२) उसमें आये मुख्य विचारों और भावों को समझकर रेखांकित कर लेना चाहिए ।

(३) अनुच्छेद के बाद आये प्रश्नों के उत्तर उसी में खोजने का प्रयत्न करना चाहिए ।

(४) उत्तर लिखते समय यथासंभव अपने शब्दों का प्रयोग कर लेना चाहिए ।

(५) क्रिया के काल का ध्यान रखना चाहिए । जिस काल में प्रश्न हो, उसी काल में ही उतर देना चाहिए ।

नोट : प्रश्न दो प्रकार के होंगे । कुछ प्रश्नों के उत्तर पूरे वाक्यों में देना पड़ेगा और कुछ प्रश्नों के उतर दो-एक शब्दों में ।

उदाहरण : जब पूर्णिमा का चाँद आकाश में उदय होता है, तो उसका दृश्य देखते ही बनता है । अगर आसमान साफ हो, तो गोलाकार चन्द्रमा सबका मन मोह लेता है । वह मन में इतना लोभ जगाता है कि उसे हाथ में ले लेने की इच्छा होती है । इसलिए रूठे हुए शिशुओं को समझाने के लिए माँ चाँद को दिखलाती है । उसे मामा कहकर बुलाती है । शिशु चाँद को देखते ही खुश हो जाता है और रोना बंद कर देता है । आज हम जानते हैं कि चन्द्रमा की अपनी किरण नहीं होती । जब सूर्य की किरणें उस पर पड़ती हैं, तो वह जगमगा उठता है । चन्द्रमा धरती के अति निकट है, इसलिए उसे जानने के लिए विज्ञान बहुत-सी कोशिश करता है । इसका नतीजा यह हुआ कि आज आदमी चाँद पर जा पहुँचा है ।

https://withteachers.in/

प्रश्न : १. ऊपर लिखे गये गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पूरे वाक्यों में दीजिए —

(१) गोलाकार चन्द्रमा कब सबका मन मोह लेता है ?

(२) रूठे हुए शिशुओं को समझाने के लिए माँ क्या करती है ?

(३) विज्ञान की कोशिश का नतीजा क्या हुआ ?

प्रश्न : २. निम्नलिखित प्रश्नों के उतर कोष्ठकों में से चुनकर दीजिए –

(१) आसमान का अर्थ है -------- (पाताल, आकाश, आश्चर्य)

(२) मामा का अर्थ है --------(दादा का बेटा, नाना का बेटा, मौसा का बेटा)

(३) चाँद जगमगा उठता है, क्योंकि --------

(उसका अपना प्रकाश है, सूरज की किरणें उस पर पड़ती हैं, वह पृथ्वी के पास है ।)

(४) नतीजा -------- शब्द है । (पुंलिंग, स्त्रीलिंग)

■ ■ ■

https://withteachers.in/

अनुवाद

QD1JR3

अनुवाद क्या है ?

एक भाषा में लिखित वाक्य या वाक्यों को दूसरी भाषा में लिखना अनुवाद कहलाता है । जाहिर है कि अनुवाद कार्य में अनुवादक को दोनों भाषाओं का सही ज्ञान होना आवश्यक है ।

मातृभाषा ओड़िआ से राष्ट्रभाषा हिन्दी में तथा हिन्दी से ओड़िआ में अनुवाद करने के लिए इन दोनों भाषाओं को जानना जरूरी है ।

अनुवाद कैसे किया जाता है ?

– पहले मूल भाषा के वाक्य को पढ़ना और ठीक से समझ लेना चाहिए, जिससे मूल विचार को पकड़ा जा सके ।

– फिर मूल भाषा के वाक्य के विभिन्न अंगों को समझना जरूरी है । क्योंकि प्रत्येक भाषा की वाक्य–संरचना की शैली अलग–अलग होती है । मूल भाषा के वाक्य के अंगों का आपस में कैसा संबंध है, उसे भी समझना आवश्यक है ।

– वाक्य के दो मुख्य अंश होते हैं – उद्देश्य अथवा कर्त्ता का अंश और उसके अनुसार चलने वाली क्रिया या विधेय का अंश ।

कर्त्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुरूप क्रिया होती है । यह हिन्दी भाषा की विशेषता है । ओड़िआ में क्रिया पर कर्त्ता के लिंग का प्रभाव नहीं पड़ता । अतएव ओड़िआ वाक्य लिखते समय कर्त्ता पद के लिंग को जानना आवश्यक नहीं है । इसके विपरीत हिंदी के हर संज्ञापद का लिंग जानना जरूरी है ।

https://withteachers.in/

१. निम्न उदाहरणों को देखिए :

लिंग (पुं) - लड़का जाता है = ପିଲାଟି ଯାଏ / ଯାଉଛି ।

(स्त्री) - लड़की जाती है = ଝିଅଟି ଯାଏ / ଯାଉଛି ।

पुरुष (उत्तम)- में गावँ में रहता हूँ । = ମୁଁ ଗାଆଁରେ ରହେ ।

(मध्यम)- तुम क्या करते हो ? = ତୁମେ କଅଣ କର / କରୁଛ ?

(अन्य)- किसान खेती करते हैं । କୃଷକମାନେ ଚାଷ କରନ୍ତି ।

वचन (एक)- लड़की काम करती है = ଝିଅଟି କାମ କରେ / କରୁଅଛି ।

(बहु) - लड़कियाँ काम करती हैं । = ଝିଅମାନେ କାମ କରନ୍ତି / କରୁଛନ୍ତି ।

२. हिन्दी में संबंध (कारक) के बाद वाले शब्द के लिंग और वचन के अनुसार संबंध – चिह्न लगते हैं; जैसे —

राम का भाई (भाई – पुं, एक वचन है तो – का)

राम के लड़के (लड़के – पुं, बहु वचन है तो – के)

राम की बहन (बहन – स्त्री , एक वचन है तो – की)

राम की बहनें (बहनें – स्त्री, बहुवचन है तो भी – की)

३. हिन्दी में कर्म के अनुसार भी क्रिया चलती है । वाक्य भूत काल में होने पर और क्रिया सकर्मक तथा – आ / ए/ ई प्रत्यय युक्त होने पर कर्त्ता के साथ 'ने' परसर्ग लगता है । ऐसी स्थिति में क्रिया कर्त्ता के अनुसार नहीं चलती । वाक्य में कर्म होने पर क्रिया कर्म के लिंग –वचन के अनुसार बदलती है, अन्यथा स्वतंत्र रहती है । यह विशेषता ओड़िआ भाषा में नहीं है । जैसे –

लड़के ने फल खाया ।

लड़की ने फल खाया ।

लड़के ने रोटी खायी ।

https://withteachers.in/

लड़की ने रोटी खायी ।

लड़के ने चार आम खाये ।

लड़की ने चार आम खाये ।

लड़के ने दो रोटियाँ खायीं ।

लड़की ने दो रोटियाँ खायीं ।

नोट – ऊपर के वाक्यों में कर्त्ता के साथ – ने परसर्ग आने पर कर्म के लिंग–वचन के अनुसार क्रिया का रूप बदला है ।

४. क्रिया के रूप :

ओड़िआ तथा हिन्दी में क्रिया के तीन काल होते हैं —

भूत, वर्त्तमान और भविष्यत् ।

हिन्दी में कर्त्ता के लिंग, वचन और पुरुष तीनों के अनुसार क्रिया बदलती है, जब कि ओड़िआ में केवल वचन और पुरुष के अनुसार । निम्नलिखित वाक्यों को देखें और दोनों भाषाओं के क्रिया –रूपों को समझें —

भूत काल

१. उत्तम पुरुष –	मैं गया / गयी = ମୁଁ ଗଲି ।
	हम गये / गयीं = ଆମ୍ଭେମାନେ ଗଲୁଁ ।
२. मध्यम पुरुष –	तू गया / गयी – ତୁ ଗଲୁ ।
	तुम गये / गयीं – ତୁମେ ଗଲ ।
	आप गये / गयीं – ଆପଣ ଗଲେ ।
३. अन्य पुरुष –	वह गया / गयी – ସେ ଗଲା ।
	वे गये / गयीं – ସେମାନେ ଗଲେ ।

https://withteachers.in/

कर्त्ता के साथ 'ने' आने पर और कर्म न रहने पर क्रिया रूप स्वतंत्र बनते हैं, देखिए ।

उत्तम पुरुष – मैंने खाया । हमने खाया ।

मध्यम पुरुष – तूने खाया । तुमने खाया । आपने खाया ।

अन्य पुरुष – उसने खाया । उन्होंने खाया ।

राम ने खाया । लीला ने खाया ।

राम और लीला ने खाया ।

वर्त्तमान काल

१. उत्तम पुरुष – मैं काम करता हूँ / करती हूँ – ମୁଁ କାମ କରୁଛି ।

हम काम करते हैं / करती हैं – ଆମ୍ଭେମାନେ କାମ କରୁଛୁ ।

२. मध्यम पुरुष – तू काम करता है / करती है – ତୁ କାମ କରୁଛୁ ।

तुम काम करते हो / करती हो – ତୁମେ କାମ କରୁଛ ।

३. अन्य पुरुष – हरि काम करता है / सीता काम करती है ।

ହରି କାମ କରୁଛି / ସୀତା କାମ କରୁଛି ।

हरि और रमेश काम करते हैं / मालती और लता काम करती हैं ।

ହରି ଓ ରମେଶ କାମ କରୁଛନ୍ତି / ମାଳତୀ ଓ ଲତା କାମ କରୁଛନ୍ତି ।

भविष्यत् काल

१. उत्तम – मैं पढ़ूँगा / पढ़ूँगी – ମୁଁ ପଢ଼ିବି ।

हम पढ़ेंगे / पढ़ेंगी – ଆମ୍ଭେମାନେ ପଢ଼ିବୁ ।

२. मध्यम – तू पढ़ेगा / पढ़ेगी – ତୁ ପଢ଼ିବୁ ।

तुम पढ़ोगे / पढ़ोगी – ତୁମେ ପଢ଼ିବ ।

https://withteachers.in/

३. अन्य – राम पढ़ेगा /सीता पढ़ेगी – ରାମ / ସୀତା ପଢ଼ିବ ।

राम और श्याम पढ़ेंगे – ରାମ ଓ ଶ୍ୟାମ ପଢ଼ିବେ ।

सीता और मीता पढ़ेंगी – ସୀତା ଓ ମୀତା ପଢ଼ିବେ ।

हिन्दी में पदसमूह (अनेक पदों का एक साथ गुंफन) बनाते समय विभक्ति / परसर्ग में परिवर्त्तन होता है । ऐसा ओड़िआ में नहीं है, जैसे —

(i) उसका घर पास में ही है – ତା'ର ଘର ଏଇ ପାଖରେ ।

उसके घर में चार आदमी हैं – ତା'ର ଘରେ ଚାରିଜଣ ଲୋକ ଅଛନ୍ତି ।

(ii) काला घोड़ा चरता है – କଳା ଘୋଡ଼ା ଚରୁଅଛି

काले घोड़े को घास दो – କଳା ଘୋଡ଼ାକୁ ଘାସ ଦିଅ ।

इस प्रकार अनुवाद करने के अनेक तरीके जानने की जरूरत है । उन्हें धीरे – धीरे सीखें । अनुवाद करें तो आसानी होगी ।

निम्नलिखित वाक्यों का हिंदी में अनुवाद कीजिए —

୧	ଆଜି ବର୍ଷା ହେଉଛି ।	आज वर्षा हो रही है ।
୨	ଆକାଶକୁ ମେଘ ଢାଙ୍କି ରଖିଛି ।	________________
୩	ଏହା ଶ୍ରାବଣ ମାସ ।	________________
୪	ଏହା ଚାଷର ସମୟ ।	________________
୫	ଚାଷୀମାନେ ବିଲକୁ ଯାଆନ୍ତି ।	________________
୬	ସେମାନେ ଦିନ ଯାକ ହଳ କରନ୍ତି ।	________________
୭	ବିହନ ବୁଣି ଦେଲେ ଚାରା ଉଠେ ।	________________
୮	ବର୍ଷା ନ ହେଲେ ଚାଷ ହେବ ନାହିଁ ।	________________

https://withteachers.in/

୯ ବାଳକମାନେ ସ୍କୁଲ ଯାଉଛନ୍ତି । ----------------

୧୦ ବାଳିକାମାନେ ଗୀତ ଗାଇବେ । ----------------

୧୧ ଦେଖ, ସୂର୍ଯ୍ୟୋଦୟ ହେଲାଣି । ----------------

୧୨ ଚାଲ, ବାହାରେ ଟିକିଏ ବୁଲିବା । ----------------

୧୩ ଥଣ୍ଡା ପବନ ବୋହୁଛି । ----------------

୧୪ ସକାଳୁ ଉଠି ବ୍ୟାୟାମ କରିବା ଉଚିତ । ----------------

୧୫ ସହରରେ ବହୁତ ଲୋକ ରହନ୍ତି । ----------------

୧୬ ସେମାନେ ରାତିରେ ଡେରିରେ ଶୁଅନ୍ତି । ----------------

୧୭ ତୁମେ ସେମିତି କରିବ ନାହିଁ । ----------------

୧୮ ଶୀଘ୍ର ଶୋଇବ ଏବଂ ଶୀଘ୍ର ଉଠିବ । ----------------

୧୯ ଭଲ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ପାଇଁ ଭଲ ଭୋଜନ ଦରକାର ।----------------

୨୦ ଆମେ ସମସ୍ତେ ଭଲ ପିଲା । ----------------

निम्नलिखित वाक्यों का ओड़िआ में अनुवाद कीजिए —

१ हमारे देश का नाम भारतवर्ष है ।

२ यहाँ सबसे ऊँचा पहाड़ है ।

३ सागर मेरे देश का पाँव पखारता है ।

४ मेरे देश में करोड़ों लोग बसते हैं ।

५ मेरे मुहल्ले में दस बच्चे हैं ।

६ वे चार बजे खेलते हैं ।

७ लड़कियाँ साइकिल चलाती हैं ।

८ हमारे घर के पास एक पार्क है ।

https://withteachers.in/

९ वहाँ बहुत–से पेड़–पौधे हैं ।

१० शाम को लोग वहाँ टहलने जाते हैं ।

११ बच्चे, बुजुर्ग खेलते हैं ।

१२ पुरी समुद्र के किनारे बसा है ।

१३ कटक ओड़िशा का पुराना शहर है ।

१४ अकबर एक उदार शासक थे ।

१५ दिल्ली भारत की राजधानी है ।

१६ जगन्नाथ का भात जगत पसारे हाथ ।

१७ होली भारत का बड़ा त्योहार है।

१८ लोग एक दूसरे पर रंग डालते हैं ।

१९ ईद में लोग भोज देते हैं ।

२० आजकल बड़ी गर्मी पड़ रही है ।

२१ बिना छाते और जूतों के बाहर न जाएँ ।

२२ रामू के पास एक कलम थी ।

२३ वह अच्छा नाचता–गाता है ।

२४ मेरा भारत एक महान देश है ।

२५ मैं अपने देश से प्यार करता हूँ ।

https://withteachers.in/